



सिद्धिमुलं प्रबन्धनम्
भा. प्र. सं. इन्दौर
IIM INDORE

भारतीय प्रबंध संस्थान इंदौर

ज्ञान शिखर

पंचम अंक, वर्ष 2020





सिद्धिमूलं प्रबन्धनम्
भा. प्र. सं. इन्दौर
IIM INDORE

भारतीय प्रबंध संस्थान इंदौर

प्रतीक चिन्ह

संस्कृत शब्द सिद्धिमूलं प्रबन्धनम् में, यह विश्वास निहित है कि, सभी उपलब्धियों के मूल में प्रबन्धन है।

यह चार खण्डों में एक चक्र द्वारा प्रदर्शित किया गया है। सामूहिक रूप से ये एकल भाग दर्शाते हैं कि, प्रबंधन बहु – आयामी है एवं एकीकृत पूर्णता की रचना करता है। नीले रंग में खण्ड, वृत्त के तीन चतुर्थांश बनाते हैं जबकि बाहर खुला हुआ चौथा खण्ड, परिवर्तनीय परिवेश के लिए प्रहणशीलता को दर्शाता है।

लक्ष्य

आईआईएम इन्दौर सामाजिक रूप से जागरुक प्रबंधको और उद्यमियों को विकसित करने वाला, विश्व स्तरीय शैक्षणिक मानकों के साथ, एक प्रासंगिक बिजनेस स्कूल होना चाहता है।

हम निम्न के लिए प्रतिबद्ध हैं –

- ◆ प्रबंध शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्टता, अनुसंधान और प्रशिक्षण
- ◆ समकालीन भागीदार-केन्द्रित शिक्षण और शिक्षण और शिक्षण गतिविधियों का प्रयोग
- ◆ प्रबंध शिक्षा के उभरते क्षेत्रों में उपस्थिति



सिद्धिमुलं प्रबन्धनम्
भा. प्र. सं. इन्दौर
IIM INDORE

ज्ञान शिखर



ज्ञान शिखर पंचम अंक

वर्ष 2020-21

संरक्षक:

प्रोफेसर हिमाँशु राय
निदेशक

मार्गदर्शक:

कर्नल गुरुराज गोपीनाथ पामिडि (सेवानिवृत्त)
मुख्य प्रशासनिक अधिकारी

संपादक:

जयनाथ यादव, राजभाषा अधिकारी

सह संपादक:

राजेश कुमार श्रीवास्तव

पत्राचार का पता:

संपादक

ज्ञान शिखर, राजभाषा अनुभाग

प्रबंध शिखर, भारतीय प्रबंध संस्थान इंदौर

राऊ-पीथमपुर रोड, इंदौर 453556 (म.प्र.)

दूरभाष 0731-2439629



सिद्धिमुलं प्रबन्धनम्
भा. प्र. सं. इन्दौर
IIM INDORE

ज्ञान शिखर



अनुक्रमणिका

1. निदेशक की कलम से		03
2. मुख्य प्रशासनिक अधिकारी का संदेश		04
3. संपादकीय		05
4. सेना में जो कुछ सीखा	- कर्नल गुरुराज गोपीनाथ पामिडि	06
5. कोविड-19 से खतरा	- प्रो. शशांक शेखर चंदा	08
6. विद्यावान और विद्वान	- राजेश श्रीवास्तव	10
7. आध्यात्मिक कविता	- प्रवाह शुक्ल	12
8. लाजमी था एवं वर्तमान परिदृश्य	- अक्षिता श्रीवास्तव	13
9. मेरी नजर से एवं कोरोना वायरस और प्रकृति	- शुभ्रा कुमारी	14
10. नदियों के लिए वरदान	- डॉ. कल्पना श्रीवास्तव विशेष अतिथि लेखिका	15
11. काली स्याही एवं मैं हूँ	- नंदिता पांडे	18
12. कोरोना कालखंड	- मुकेश चौधरी	19
13. इस मंजिल के हम	- रुद्रांश कंधारिया	37
14. कविता: लाल भारत	- भव्या मिश्रा	37
15. हमें प्रकृति से जोड़ने	- अशोक तोमर	38
16. इस लॉक डाउन	- अजय दाश	39
17. उत्तम मार्ग	- मनीष रमनानी	40
18. लॉक डाउन एवं कितना गिरा हुआ	- श्याम राव	41
19. शहीद उय्यालवाडा नरसिम्हा रेड्डी	- रीतेंद्र सिंह	42
20. कोरोना वायरस	- सार्थक खोडे	43
21. हिंदी दिवस	- हर्षित लाहोटी	43
22. मैं जन्म मैं जीवन	- डॉ. अनन्या मिश्रा	44
23. कहानी	- राहुल बघेल	45
24. भाषा और संप्रेषण	- श्रीमती गिरिजाकुमार	47
25. कोरोना	- बी. कोडवानी	49
26. कोविड-19 एक सकारात्मक	- डॉ. कंचन विश्वकर्मा	52
27. बिटकॉइन: क्या है क्रिप्टोकॉरेंसी	- अनिल कौशल	53
28. मोना गई बाहर	- शिवांगी गोयल	55
29. जीवन कलश को अपने संवारो	- अरुणा छाजेड़	55
30. महिलाओं के लिए लॉकडाउन टूटने न दें	- डॉ. सोपनामयी आचार्या (दाश)	56



निदेशक की कलम से...



प्रोफ़ेसर हिमाँशु राय
निदेशक
भारतीय प्रबंध संस्थान इंदौर

यह हर्ष का विषय है कि भारतीय प्रबंध संस्थान इंदौर की वार्षिक हिंदी पत्रिका ज्ञान-शिखर के पांचवें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। देश में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में संस्थान की सार्थक एवं महत्वपूर्ण भूमिका है। सामाजिक रूप से जागरूक प्रबंधकों एवं उद्यमियों को विकसित करने में संस्थान विश्व स्तरीय शिक्षण मानकों के साथ एक प्रासंगिक व्यवसायिक प्रबंध संस्थान है, जहाँ व्यावसायिक कारोबार एवं प्रबंधकीय कौशल की आवश्यकताओं के अनुरूप उच्च स्तरीय प्रबंधकीय शिक्षा प्रदान की जाती है। कोरोना महामारी ने हमारे जीवन शैली एवं शिक्षण-प्रशिक्षण पद्धति को भी बदल कर रख दिया है। शिक्षा पूरी तरह डिजिटल हो चली है। हमें उम्मीद है, देशवासी इस महामारी की चुनौतियों को अवसर में बदलते हुए शीघ्र ही निजात पा लेंगे।

किसी भी देश की समृद्ध संस्कृति का आधार उसकी अपनी मजबूत भाषा पर टिकी होती है तथा उस देश की संस्कृति से उसके उत्कर्ष, आचार, विचार, धर्म एवं राजनीति के सोपानों को समझा जा सकता है। हिंदी देश की राजभाषा है, करोड़ों लोग इसे देश तथा विदेशों में बोलते एवं समझते हैं। यह धीरे-धीरे अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप ग्रहण कर रही है। सोशल मीडिया, इंटरनेट आदि पर इसका प्रयोग तेजी से बढ़ रहा है। इसका विकास करना इसे प्रशासनिक कार्यों में अधिक से अधिक प्रसारित करना हमारा संवैधानिक दायित्व एवं गौरव की बात है।

राजभाषा के क्रियान्वयन की दिशा में संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा सराहनीय प्रयास किया जा रहा है। इस कोरोना काल में भी वेबीनार द्वारा राजभाषा की विभिन्न गतिविधियों को अंजाम दिया जा रहा है, जिसमें राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें, हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन तथा राजभाषा हिंदी में अधिक से अधिक पेपर रहित पत्राचार आदि शामिल है। हिंदी पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा के प्रति हमारे दायित्वों को परिलक्षित करता है। मैं आशा करता हूँ कि ज्ञान शिखर, संस्थान के सदस्यों की सृजनात्मक प्रतिभा की अभिव्यक्ति को हिंदी भाषा के माध्यम से उजागर करने हेतु एक उपयुक्त साधन सिद्ध होगा। मैं संपादक मंडल एवं रचनाकारों को शुभकामनाएं एवं बधाई देता हूँ।

प्रोफ़ेसर हिमाँशु राय



मुख्य प्रशासनिक अधिकारी की कलम से...



कर्नल गुरुराज गोपीनाथ पामिडी
(सेवानिवृत्त)

मुख्य प्रशासनिक अधिकारी
भारतीय प्रबंध संस्थान इंदौर

संस्थान की पत्रिका ज्ञान शिखर का पांचवाँ अंक आप सबके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यन्त हर्ष एवं गौरव का अनुभव हो रहा है। इस पत्रिका के माध्यम से हमारा लक्ष्य राजभाषा का प्रसार-प्रचार करना है। हिंदी संघ की राजभाषा के साथ-साथ हमारी राष्ट्रीय पहचान भी है। यह बहुसंख्यक भारतीयों की भाषा तथा अन्य भारतीय भाषा समुदायों को जोड़ने का माध्यम भी है।

हमारा संस्थान कार्यालयीन कामकाज में हिंदी के प्रयोग को सतत बढ़ाएं जाने हेतु निष्ठापूर्वक प्रयत्नशील एवं प्रतिबद्ध है। संस्थान में नियमित रूप से हिंदी कार्यशाला एवं राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन एवं अधिक से अधिक प्रशासनिक कार्य डिजिटल माध्यमों से राजभाषा हिंदी में किए जाने पर जोर दिया जाता है। इसके लिए नियमित रूप से कार्मिकों को प्रशिक्षित भी किया जाता है। विभागीय पत्रिकाएं कार्मिकों के लिए अपनी रचनाओं की मौलिक अभिव्यक्ति का माध्यम बनती हैं। इसके साथ ही राजभाषा के प्रचार-प्रसार में भी इनका अहम योगदान होता है। ज्ञान शिखर का प्रकाशन संस्थान की राजभाषा विभाग का एक सराहनीय एवं प्रशंसनीय प्रयास है।

ज्ञान शिखर के संपादक मंडल और रचनाकारों को बधाई।

शुभकामनाओं सहित।

जय हिन्द !



जयनाथ यादव
राजभाषा अधिकारी
भारतीय प्रबंध संस्थान इंदौर

संपादकीय...



संस्थान की हिंदी पत्रिका ज्ञान शिखर का पांचवाँ अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। भाषाओं की दृष्टि से हम समृद्ध राष्ट्र हैं। हमारी समृद्ध भाषाएं हमें एक राष्ट्र के रूप में पिरोती हैं। इनकी समृद्धि राष्ट्रीय समृद्धि है। हमारी भाषाएं जितनी समृद्ध होगी, हमारी मौलिक चेतना भी उतनी सबल एवं विकसित होगी। राजभाषा हिंदी हमारी राष्ट्रीय अस्मिता एवं आत्म गौरव से जुड़ी भाषा है। इसका प्रचार-प्रसार एवं सरकारी कार्यों में इसका क्रियान्वयन सुनिश्चित करना हमारा कर्तव्य है। संस्थान जहां एक ओर प्रबंधन विषयों के उच्च शिक्षा के क्षेत्र में नया कीर्तिमान स्थापित कर रहा है, वहीं निदेशक के मार्गदर्शन में राजभाषा हिंदी के क्रियान्वयन की दिशा में भी काफी प्रगति की है। राजभाषा के प्रसार एवं कार्यान्वयन में मुख्य प्रशासनिक अधिकारी के कर्नल गुरुराज गोपीनाथ पामिडि (सेवानिवृत्त) के महती योगदान का उल्लेख करना नहीं भूल सकता। आप गैर - हिंदी भाषी होते हुए भी अपना अधिकांश कार्य राजभाषा के माध्यम से करने पर जोर देते हैं। धारा 3 (3) का अनुपालन आप कड़ाई से सुनिश्चित कराते हैं। राजभाषा नियमों, अधिनियमों एवं आदेशों का अनुपालन सुनिश्चित कराने में आपके अटल प्रयास का नतीजा है कि संस्थान भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा प्रदत्त वार्षिक कार्यक्रमों के लक्ष्य के काफी करीब हैं।

संस्थान अपनी तमाम शैक्षणिक गतिविधियों के साथ-साथ राजभाषा के क्रियान्वयन की दिशा में भी सतत आगे बढ़ रहा है। प्रशासनिक कार्यों में उच्च अधिकारियों द्वारा राजभाषा हिंदी का प्रयोग अधीनस्थ कर्मिकों के लिए अनुकरणीय है। इसके साथ-साथ संस्थान में लागू वित्तीय प्रोत्साहन योजनाएं भी कर्मिकों को प्रेरणा एवं प्रोत्साहित करने में सहायक हैं।

इस पत्रिका के प्रकाशन में भाषा की सरलता, बोधगम्यता के साथ-साथ विचारों की सहज सप्रेषणीयता का ध्यान रखा गया है। इस पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग हेतु सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। पत्रिका को और अधिक रुचिकर, पठनीय एवं ज्ञानवर्धक बनाने में संपादक मंडल को आपके सुझावों का सदैव स्वागत रहेगा।

इस अंक के समस्त लेखकों, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, क्रय विभाग एवं सह संपादक श्री राजेश कुमार श्रीवास्तव का आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके सहयोग से पत्रिका का प्रकाशन संभव हो पाया है।

हिंदी दिवस की मंगल कामनाओं सहित !



सेना में जो कुछ सीखा - लॉकडाउन में काम आया



कर्नल गुरुराज गोपीनाथ पामिडी
(सेवानिवृत्त)

मुख्य प्रशासनिक अधिकारी
भारतीय प्रबंध संस्थान इंदौर

कोरोनावायरस के कारण उत्पन्न अभूतपूर्व स्थिति ने हम में से प्रत्येक को अनूठे तरीकों से प्रभावित किया है। कई लोगों ने चार महीनों के राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन से उत्पन्न चुनौतियों को आसानी से स्वीकार कर लिया। हालांकि, कुछ को नई वास्तविकता को स्वीकार करना अभी बाकी है तथा इस अवधि को काफी कठिन और घुटन भरा माना जा रहा है।

शैक्षणिक-सह-आवासीय परिसर में रहने की कई खासियतें और प्रशासनिक चुनौतियां हैं। मेरे एक सहकर्मी की अचानक टिप्पणी ने मुझे सोच में डाल दिया। हालांकि, उन्होंने इसे सामान्य रूप से कहा था कि, 'चूँकि आप एक सेना के सेवानिवृत्त व्यक्ति हैं, इसलिए आप किसी भी गतिशील विषम स्थिति को अच्छी तरह से अपने अनुकूल और समायोजित कर सकते हैं। उनकी यह सोच सही थी, बहुत सारी ऐसी चीजें हैं जो सेना ने मुझे सिखाई हैं!

यहाँ मैं जीवन की चार महत्वपूर्ण सीख रखना चाहूँगा।

पाठ 1: वास्तव में आभारी होने का क्या मतलब है।

खुशी के सबसे बड़े रहस्यों में से एक जानना चाहते हैं? यह है- आभारा टोनी रॉबिंस कहते हैं, यदि आप अपना जीवन बदलना चाहते हैं, तो अपनी सोच को अपेक्षा से प्रशंसा में बदलें। लोग, हक जताने वाले लोगों को पसंद नहीं करते हैं, क्योंकि वे लगातार शिकायत करते हैं और उनका यही काम होता है। जब आपको जमीन पर सोना पड़े, टंडा खाना खाना पड़े, और जब आपको जमा देने वाले तापमान या भयंकर गर्मी में काम करना पड़े तो, आप वास्तव में अपने आरामदायक जीवन की सराहना करना सीखते हैं। जब आप रेगिस्तान में तैनात होते हैं और इतना गरम पानी पीने को मिले, जिसका एक घूट भी पीना मुश्किल होता हो, तो आप उस सर्वशक्तिमान को धन्यवाद देते हैं जब पीने के लिए टंडा पानी मिलता है।

जब आपके पास कृतज्ञता का भाव हो; आप खुश और सकारात्मक हैं, तो लोग भी आपके आस-पास रहना चाहते हैं।

पाठ 2: सीखने की सहानुभूति

भारतीय सैन्य अकादमी (IMA) में सीखी जाने वाली महत्वपूर्ण चीजों में से एक इसके क्रेडो से है जिसमें कहा गया है कि:

आपके देश की सुरक्षा, सम्मान और कल्याण, सदैव एवं हमेशा पहले आते हैं।

आपके द्वारा आदेशित जवानों का सम्मान, कल्याण और हित, उसके बाद आता है।

आपकी खुद की सुविधा, हित और सुरक्षा हमेशा और हर समय आखिर में आती है।

अपने जवानों के हित को अपने से पहले रखने का भाव केवल सहानुभूति से आता है। सहानुभूति का अर्थ है दूसरे की भावनाओं और अनुभवों को समझने और साझा करने की क्षमता। जैसा कि हार्प ली के उपन्यास टू किल अ मॉकिंगबर्ड में चरित्र पात्र एटिकस फिच कहते हैं, आप कभी भी किसी व्यक्ति को तब तक नहीं समझते जब तक कि आप उसके दृष्टिकोण से चीजों पर विचार नहीं करते... जब तक आप उसकी त्वचा पर चढ़कर उसमें नहीं चलते। अर्थात् उसके अंतर भाव एवं दुख - सुख को महसूस नहीं करते।

सहानुभूति के साथ, आप उन लोगों को देखते हैं जिन्हें आप प्यार करते हैं, जो वे हैं, न कि जिनकी आप कल्पना करते हैं या उनके होने



की कामना करते हैं। आप उनके गुणों के लिए उनकी सराहना करते हैं, न कि वे आपके लिए क्या करते हैं इसके लिए, और जब आप एक ही अनुभव साझा करते हैं, तो आप इसे स्वीकार करते हैं, भले ही आपके पास अलग-अलग विचार और भावनाएं क्यों न हो।

पाठ 3: अखंडता से कोई समझौता नहीं।

सेना आपको सिखाती है कि जो भी सही हो उसके लिए ईमानदारी से निडर होकर खड़े रहें, और संकट की घड़ी में चाहे जितना भी गहन दबाव हो, नैतिक मूल्यों को कायम रखें। अखण्डता एक आवश्यक नेतृत्व गुण है। पारदर्शी बने रहें, यह जाने कि गलतियों को कब स्वीकार करना है, यह सुनिश्चित करें कि कोई लीपापोती न हो, और किसी के दोष को दूसरों पर न मढ़ा जाए। सबसे सम्मानित और प्रभावी सैन्य नेता इसे सहजता से समझते हैं।

यही बात रोजमर्रा की जिंदगी पर भी लागू होती है। अखंडता एवं समानता का मतलब है कि हमारा व्यवहार हमारे मूल्यों के साथ संरेखित हो। यदि कोई दृढ़ता से मानता है कि ईमानदारी महत्वपूर्ण है, लेकिन अपने व्यक्तिगत जीवन में बेईमानी करता हो, तो आमतौर पर ऐसा व्यक्ति आगे चलकर मानसिक रूप से परेशानी महसूस करेगा। अखंडता एवं ईमानदारी से हम लगातार सकारात्मक सोच कायम रखते हैं और यहां तक कि इससे दूसरों के साथ बेहतर रिश्ते बनते हैं। लब्बोलुआब यह है कि जब आप अपनी बात चलाते हैं तो आपको बहुत अच्छा लगता है।

पाठ 4: प्रतिकूलता पर विजय कैसे प्राप्त करें।

हर कोई सेना के सेवा काल के दौरान कुछ प्रतिकूल परिस्थितियों से गुजरता है। मेरे सेवा काल के दौरान भी कई बार ऐसा वक्त आया जब चीजें मेरे पेशेवर जीवन में, मेरे प्रतिकूल थीं। विपत्ति के उस समय ने मुझे जीवन में बाद में आई प्रतिकूल परिस्थितियों के लिए बहुत साहस और शक्ति दी।

जब जीवन बड़ी आहत आती है, तो उससे उबरने के लिए आपके पास अपनी भावनाएं होती हैं, इसलिए आपका कोई बहुत बड़ा नुकसान नहीं हो पाता। जीवन के एक आवश्यक हिस्से के रूप में प्रतिकूलता को जीवन का एक आवश्यक तत्व समझे, तथा सबसे बड़े नकारात्मक स्थितियों में भी अपने सकारात्मकता पर ध्यान दें।

जैसा कि इस महामारी ने हम सभी को सिखाया है, सभी व्यक्ति एक जैसे हैं। धर्म, रंग, राष्ट्रीयता, लिंग, आदि पर आधारित सभी भेदभाव कृत्रिम, सतही और पूरी तरह से व्यर्थ हैं। केवल एक चीज जो सबसे महत्वपूर्ण है, वह है मानवता, और जितनी जल्दी हम इसे स्वीकार करेंगे, उतना ही हम सब खुश रहेंगे।



कोविड-19 से खतरा: अब तक हम क्या जानते हैं



प्रो. शशांक शेखर चंदा
रणनीतिक प्रबंधन

कोविड - 19 , मौतों की अपेक्षित संख्या, एवं अस्पताल में भर्ती होने के संबंध में आमजनों के मन में उठ रहे कुछ प्रश्नों के उत्तरों का एक संकलन। लेख के अंत में संदर्भ दिए गए हैं।

1. कोविड - 19 से कितने लोगों को मृत्यु हो सकती है ?

नोबेल विजेता बायो-फिजिसिस्ट माइकल लेवित ने बताया है कि कोविड - 19 के कारण हर एक लाख लोगों में पचास से सौ लोगों की मृत्यु होने की सम्भावना है। 1

इंडिया में 138 करोड़ लोग रहते हैं। 2 अगर सभी को कोविड - 19 बीमारी होगी तो कोविड - 19 के कारण 7 से 14 लाख लोगों की मृत्यु का सम्भावना है। अगर कुछ उपचार ढूँढ लिया जाता है, उस स्थिति में मरने वालों की संख्या कम होगी।

2. कोविड - 19 सकारात्मक (पॉजिटिव) परीक्षण करने वाले कई लोगों को अस्पताल में भर्ती होने के लिए नहीं कहा जाता है। क्यों ?

ब्रिटेन में हुए एक अनुसंधान के अनुसार, कोविड - 19 के लिए सकारात्मक (पॉजिटिव) परीक्षण करने वाले 1000 लोगों में से केवल 50 लोगों को अस्पताल में भर्ती होने की आवश्यकता है। 3 बाकी 950 लोग अस्पताल में बिना भर्ती हुए ही स्वस्थ हो जाते हैं। भारत में बड़ी संख्या में लोग निवास करते हैं। 2011 तक भारत में प्रति 1000 लोगों पर 0.7 अस्पताल के बिस्तर थे। 4 2018 में अपनाई गई हेल्थकेयर पॉलिसी के लक्ष्य के तहत इस संख्या को बढ़ाकर प्रति 1000 लोगों पर 2 बेड करना है, दस वर्षों में। 5 यह आवश्यक है कि गंभीर रूप से बीमार को अस्पताल भर्ती करने के लिए प्राथमिकता दी जाये।

3. अगर किसी ने कोविड - 19 सकारात्मक (पॉजिटिव) परीक्षण किया, क्या यह 100% गारंटी है कि व्यक्ति वास्तव में कोविड - 19 बीमारी से ग्रस्त है ?

नहीं। कोविड - 19 टेस्ट गलत सकारात्मक (पॉजिटिव) रिपोर्ट दी जा सकती है। 6 कोविड - 19 टेस्ट किट में खराबी के कारण एक स्वस्थ इंसान गलती से कोविड - 19 - पॉजिटिव करार दिए जा सकते हैं। यदि परीक्षा परिणाम के बारे में संदेह है, एक अलग प्रयोगशाला से दोबारा परीक्षण जरूरी है।

4. अगर किसी ने कोविड - 19 के लिए नकारात्मक परीक्षण किया है, तो क्या 100% गारंटी है कि व्यक्ति वास्तव में कोविड - 19 से बीमार नहीं है ?

नहीं। कोविड - 19 टेस्ट गलत नकारात्मक रिपोर्ट (निगेटिव) दे सकते हैं। 6 कोविड - 19 टेस्ट किट में खराबी के कारण एक पीड़ित इंसान गलती से कोविड - नेगेटिव करार दिए जा सकते हैं। यदि परीक्षा परिणाम के बारे में संदेह है, एक अलग प्रयोगशाला से दोबारा परीक्षण जरूरी है।

5. यदि किसी ने कोविड - 19 के लिए सकारात्मक परीक्षण किया है, तो मरने की जोखिम संभावना क्या है ?

ब्रिटेन में हुए एक अनुसंधान के अनुसार 3 कोविड - 19 के लिए सकारात्मक परीक्षण करने वाले 1000 लोगों में से अधिकतम 10 लोगों के मरने की संभावना है।

याद रखें कि कोविड - 19 के लिए सकारात्मक (पॉजिटिव) परीक्षण करने वाले 1000 लोगों में से केवल 50 लोगों को अस्पताल में भर्ती होने की आवश्यकता है। इन 50 लोगों में से, केवल 25 लोगों को ऑक्सीजन सपोर्ट या वेंटिलेटर सपोर्ट की आवश्यकता



होती है। वेंटिलेटर में रखे गए मरीजों में से चालीस प्रतिशत लोगों की मृत्यु हो जाती है। ऑक्सीजन सपोर्ट वाले मरीजों के पच्चीस प्रतिशत लोग की मृत्यु हो जाती है। इस प्रकार, कोविड - 19 के लिए सकारात्मक परीक्षण करने वाले 1000 लोगों में से अधिकतम (40% व 25 अर्थात 10) दस लोगों की मौत होने की सम्भावना है।

6. क्या कोई दवा है जो कोविड - 19 को ठीक करती है ?

नहीं। आज तक वैज्ञानिकों ने कोविड - 19 के इलाज के रूप में किसी भी दवा को मान्यता नहीं दी है। कई आशाजनक शोध जारी हैं। मैं दो दवाओं का उल्लेख करूंगा।

एक अनुसंधान के अनुसार हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन और एजिथ्रोमाइसिन के संयोजन में जिंक सल्फेट कोविड - 19 के लिए चिकित्सीय प्रबंधन में जरूरी भूमिका निभाई जा रही है। 7 यह दवा कोविड - 19 के हल्के लक्षण वाले मरीजों की सहायता करती है। भारत में हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन सस्ता एवं प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है।

ब्रिटेन में हुए अनुसंधान 3 के अनुसार, दवा डेक्सामेथासोन से असर होता है उन कोविड - 19 मरीजों को, जिनकी सांस लेने में मदद की जरूरत है। दवा डेक्सामेथासोन को बचाने की क्षमता है: वेंटिलेटर समर्थन पर आठ में से एक मरीज, ऑक्सीजन समर्थन पर पच्चीस में से एक मरीज। डेक्सामेथासोन भारत में सस्ता एवं प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। पूर्व में डेक्सामेथासोन से कुछ बीमारियों का सफलतापूर्वक इलाज किया गया है। डेक्सामेथासोन) गठिया, रक्त / हार्मोन / प्रतिरक्षा प्रणाली विकारों, एलर्जी जैसी स्थितियों, सांस लेने में समस्या, कुछ आंत्र विकार एवं कुछ कैंसर का इलाज करने के लिए प्रयोग किये गए हैं। 8 हम ध्यान में रखें कि, कोरोनावायरस के हल्के लक्षणों के उन मरीजों को, जिनकी सांस लेने में मदद की जरूरत नहीं है, डेक्सामेथासोन से कोई असर नहीं होता है।

संदर्भ-

- [1]. <https://theunionjournal.com/chinas-covid-19-statistics-are-accurate-while-lockdown-makes-little-difference-nobel-laureate-biophysicist-levitt-tells-rt-rt-world-news/>
- [2]. <https://www.worldometers.info/world-population/india-population/>
- [3]. <https://www.bbc.com/news/health-53061281>
- [4]. <https://data.worldbank.org/indicator/SH.MED.BEDS.ZS>
- [5]. <https://health.economictimes.indiatimes.com/news/industry/the-new-healthcare-policy-mandates-a-minimum-of-2-beds-per-1000-sumeet-aggarwal/62992210>
- [6]. <https://www.forbes.com/sites/startswithabang/2020/05/07/this-is-how-false-positives-and-false-negatives-can-bias-covid-19-testing/#4edd8a4f1743>
- [7]. <https://www.medrxiv.org/content/10.1101/2020.05.02.20080036v1>
- [8]. <https://www.webmd.com/drugs/2/drug-1027-5021/dexamethasone-oral/dexamethasone-oral/details>



विद्वान एवं विद्यावान में अन्तर एक रोचक प्रसंग



राजेश कुमार श्रीवास्तव
राजभाषा अनुभाग

हनुमान जी की स्तुति में कहा गया है

विद्यावान गुणी अति चातुर । राम काज करिबे को आतुर ।।

एक होता है विद्वान एवं दूसरा विद्यावान । दोनों में आपस में बहुत अन्तर है। इसे हम इस प्रकार समझ सकते हैं, रावण जहां विद्वान है वहीं हनुमान जी विद्यावान हैं।

रावण के दस सिर हैं। चार वेद एवं छहः शास्त्र दोनों मिलाकर दस हैं। इन्हीं को दस सिर कहा गया है जिसके सिर में ये दसों भरे हों, वही दस-शीश हैं।

रावण वास्तव में विद्वान था परन्तु विडम्बना क्या है ? वह सीता जी का हरण कर ले आया। कई बार विद्वान लोग अपनी विद्वता के कारण दूसरों को शान्ति से नहीं रहने देते। उनका अभिमान दूसरों की सीता रूपी शान्ति का हरण कर लेता है और हनुमान जी उन्हीं खोई हुई सीता रूपी शान्ति को वापिस भगवान से मिला देते हैं।

हनुमान जी कहते हैं -

विनती करउँ जोरि कर रावण। सुनहु मान तजि मोर सिखावन।।

हनुमान जी ने हाथ जोड़कर कहा कि मैं विनती करता हूँ, तो क्या हनुमान जी में बल नहीं है ?

नहीं, ऐसी बात नहीं है। विनती दोनों करते हैं। जो भय से भरा हो या भाव से भरा हो।

रावण ने कहा कि तुम क्या, यहाँ देखो कितने लोग हाथ जोड़कर मेरे सामने खड़े हैं...

कर जोरे सुर दिसिप विनीता। भृकुटी विलोकत सकल सभीता।।

यही विद्वान और विद्यावान में अन्तर है।

हनुमान जी, रावण को समझाने गये। यही विद्वान और विद्यावान का मिलन है। रावण के दरबार में देवता और दिग्पाल भय से हाथ जोड़े खड़े हैं और भृकुटि की ओर देख रहे हैं। परन्तु हनुमान जी भय से हाथ जोड़कर नहीं खड़े हैं।

रावण ने कहा भी -

कीधौं श्रवन सुनेहि नहिं मोही। देखउँ अति असंक सठ तोही।।

रावण ने कहा - तुमने मेरे बारे में सुना नहीं है ? तू बहुत निडर दिखता है !

हनुमान जी बोले - क्या यह जरूरी है कि तुम्हारे सामने जो आये, वह डरता हुआ आये ?

रावण बोला - देख, यहाँ जितने देवता और अन्य खड़े हैं, वे सब डरकर ही खड़े हैं।

हनुमान जी बोले - उनके डर का कारण है, वे तुम्हारी भृकुटि को देख रहे हैं।

भृकुटि विलोकत सकल सभीता।

परन्तु मैं भगवान राम की भृकुटि की ओर देखता हूँ।

उनकी भृकुटि कैसी है ? बोले...

भृकुटि विलास सृष्टि लय होई। सपनेहु संकट परै कि सोई।।

जिनकी भृकुटि टेढ़ी हो जाये तो प्रलय हो जाए और उनकी ओर देखने वाले पर स्वप्न में भी संकट नहीं आए। मैं उन श्रीराम जी की भृकुटि की ओर देखता हूँ।



रावण बोला – यह विचित्र बात है। जब राम जी की भृकुटि की ओर देखते हो तो हाथ हमारे आगे क्यों जोड़ रहे हो ?

विनती करउँ जोरि कर रावण।

हनुमान जी बोले – यह तुम्हारा भ्रम है। हाथ तो मैं उन्हीं को जोड़ रहा हूँ।

रावण बोला – वह यहाँ कहाँ हैं ? हनुमान जी ने कहा कि... यही समझाने आया हूँ।

मेरे प्रभु राम जी ने कहा था –

सो अनन्य जाकें असि, मति न टरइ हनुमन्त। मैं सेवक सचराचर, रुप स्वामी भगवन्त।।

भगवान ने कहा है कि सबमें मुझे देखना। इसीलिए मैं तुम्हें नहीं, तुझ में भी भगवान को ही देख रहा हूँ।

इसलिए हनुमान जी कहते हैं –

स्वायउँ फल प्रभु लागी भूखा। और.... सबके देह परम प्रिय स्वामी।।

हनुमान जी रावण को प्रभु और स्वामी कहते हैं और रावण –

मृत्यु निकट आई खल तोही। लागेसि अधम सिखावन मोही।।

रावण खल और अधम कहकर हनुमान जी को सम्बोधित करता है।

यही विद्यावान का लक्षण है कि अपने को गाली देने वाले में भी जिसे भगवान दिखाई दे, वही विद्यावान है।

विद्यावान का लक्षण है –

विद्या ददाति विनयं। विनयाति याति पात्रता।।

पढ़ लिखकर जो विनम्र हो जाये, वह विद्यावान... और जो पढ़ लिखकर अकड़ जाए, वह विद्वान...

तुलसी दास जी कहते हैं –

बरसहिं जलद भूमि नियराये। जथा नवहिं वृध विद्या पाये।।

जैसे बादल जल से भरने पर नीचे आ जाते हैं, वैसे विचारवान व्यक्ति विद्या पाकर विनम्र हो जाते हैं।

इसी प्रकार... हनुमान जी हैं – विनम्र और रावण विद्वान है...

यहाँ प्रश्न उठता है कि विद्वान कौन है ? इसके उत्तर में कहा गया है कि जिसकी दिमागी क्षमता तो बढ़ गयी, परन्तु हृदय खराब हो, मन में अभिमान हो, वह केवल विद्वान है और अब प्रश्न है कि... विद्यावान कौन है ?

उत्तर में कहा गया है कि जिसके हृदय में भगवान हो साथ ही जो दूसरों के हृदय में भी भगवान को बिठाने की बात करे, वही विद्यावान है।

हनुमान जी बोले – रावण ! बाकी सब तो ठीक है, पर तुम्हारा हृदय ठीक नहीं है।

कैसे वह ठीक होगा ? कहा कि...

राम चरन पंकज उर धरहू। लंका अचल राज तुम करहू।।

अपने हृदय में राम जी को बिठा लो और फिर मजे से लंका में राज करो।

यहाँ हनुमान जी रावण के हृदय में भगवान को बिठाने की बात करते हैं, इसलिए वे विद्यावान हैं।

इस प्रसंग से हमें सीख मिलती है कि – विद्वान नहीं बल्कि विद्यावान बनने का प्रयत्न करें...

(सन्दर्भ: गोस्वामी तुलसीदास कृत मानस एवं हनुमान चालीसा)



प्रवाह शुक्ल
वित्त एवं लेखा विभाग

आध्यात्मिक कविता

यह कविता अपने गुरु देव की प्रेरणा से ही लिख पा रहा हूँ जिन्होंने सच्चा और पवित्र ज्ञान प्रदान किया उनके आशीर्वाद के बिना यह संभव नहीं है। जैसे सांसारिक पढाई में गुरु की आवश्यकता है वैसे ही आध्यात्मिक पढाई में भी सद्गुरु की अत्यधिक आवश्यकता है!...जय श्री गुरुवे नमः

क्या कभी सोचा है क्या हो तुम
कभी इसलिए नहीं सोचा होगा क्योंकि नहीं रहते हो गुम सुम
गुम सुम का मतलब नहीं की तुम रहो दुखी
पर कोशिश करनी है रहने की निर्विचार अर्थात दुखी न सुखी
यह तब हो पाएगा जब बैठोगे तुम एकांत में शांत
आखें बंद करके ध्यान करो एकदम न रहो अशांत
सबसे पहले शरीर नहीं देगा साथ
क्योंकि शरीर को कभी नहीं सिखलाया अक्रिया का स्वाद
परन्तु परेशान न होना क्योंकि प्रभु तुम्हारी सहायता करेंगे
अभ्यास योग और निरंतर प्रयास से प्रभु तुम्हारे अन्दर शक्ति भरेंगे
पहले यह समझो की तुम नहीं हो शरीर, मष्तिष्क और मन
तुम तो हो परमात्मा का अंश और सेवा कर रहा है प्रभु की कृपा से ये तन
जैसे ही सोचोगे की तुम हो आत्मा और एक दृष्टा
वैसे ही शरीर से टूट जाएगा एक होने का रिश्ता
इच्छा है मन में मष्तिष्क में तन में
पर अज्ञान में तुम्हें लगता है ये सब है तुममें
इच्छा भी इसलिए है की कभी न खत्म होगी अंत तक
क्योंकि इस चेतना को चाहिए प्रभु का स्वाद जो है अनंत तक
पहले तो शरीर को करो शांत
ध्यान में देखो शरीर बैठा है एकदम एकांत
शुरू में होगी शरीर में बेचैनी और खुजली
क्योंकि पुरानी आदत शरीर ने न बदली
लेकिन धीरे धीरे दृष्टा भाव से हो जाएगा सब
तुम पाओगे अपने को दुसरे चरण में अब
अब विचारों का महासागर उतरेगा दिमाग में
पर याद रखना यह विचार तुम नहीं हो, ये सब दिमाग में
पहले तो यह सोचना जो हुआ अच्छा हुआ, होगा जो अच्छा ही होगा और
हो रहा है जो अच्छा ही है

यह नियम प्रभु और प्रकृति का सच्चा और अच्छा ही है
तुमको विचारों के साथ नहीं होना है ना ही समझना है अच्छा या बुरा
क्योंकि तुम दृष्टा हो अर्थात देखने वाले ना हो दृश्य अच्छा या बुरा
एकांत में विचारों को देखते जाओ
परन्तु उनके साथ अपना नाता मत जोड़ते जाओ
अभ्यास से एक दिन विचार आना हो जाएगा कम
फिर तुम समझ पाओगे विचार से निर्विचार की स्थिति का सरगम
परन्तु हो ना जाना तुम अहंकारी
क्योंकि इतनी जल्दी भी आत्मबोध होने की न आएगी तुम्हारी बारी
प्रतिदिन सुबह उठकर ध्यान करो ब्रम्ह मुहुर्त में
ना भी हो पाए उस समय तो भी ध्यान करो किसी भी खाली समय में
हार ना मान जाना मेरे भाई
क्योंकि इतने दिन की है संसार की पढाई
अब नई पढाई करनी पड़ेगी और नया प्रशिक्षण लेना पड़ेगा
जो भी बेकार बातें हैं अपने अंतःकरण से निकलना पड़ेगा
प्रेम करोगे प्रभु से तो निरंतर रहेंगे याद प्रभु
प्रभु से प्रेम तभी होगा जब सबमें देखोगे प्रभु
धीरे धीरे मिट जाएगा द्वेत
प्रभु की हर कण में दिखेंगे जब जाग जाओगे और हो जाओगे चेत
सेवा भाव और प्रभु का चिंतन करना
फिर पता चल जाएगा प्रभु का ही हर जगह होना
सबमें प्रभु हैं और तुममें प्रभु हैं तुम ही प्रभु हो प्रभु ही तुम हो
कोई अलग नहीं तुम में सब है और सब में तुम हो
यदि चाहो तो ना कहो उसे तुम प्रभु मानो अद्रश्य शक्ति
पर किसी अनजान शक्ति की अवश्य करो तुम भक्ति
कर्म करो पुरुषार्थ करो पर करो समर्पित तुम सब प्रभु को
कर्मों और फल के बंधन से मुक्त करो अपने को
देखो तो इस में का कोई अस्तित्व ही नहीं
जैसे अंधेरे का अस्तित्व उजाले में नहीं
ध्यान में सब मिलेंगे तुम्हें उत्तर सारे
एक दिन लीन हो जाएगा ये मैं प्रभु में प्यारे



अक्षिता श्रीवास्तव
सुपुत्री राजेश श्रीवास्तव

लाज़मी था..

खुशी तुझे मिली नहीं, पर आएगी, ये लाज़मी था ,
सब्र तुझसे हुआ नहीं, पर करना लाज़मी था ।
बिन सोचे तो ख़्वाब भी नहीं बनते ,
तेरा जागना लाज़मी था ।
मेहनत करना लाज़मी था, तो ठोकर पड़ना भी लाज़मी था ।
गिरना, गिरकर फिर उठना लाज़मी था ।
आगे बढ़ना लाज़मी था ।
लाज़मी था कि तू जीतेगा नहीं पहली दफ़ा,
हर दफ़ा हर का सामना करना लाज़मी था ।
हाँ अगर लाज़मी था ये सब तो
तेरा जीतना भी लाज़मी था
तेरी खुशी का हर पल लाज़मी है ,
क्योंकि, तेरी हार का हर क्षण लाज़मी था ।

वर्तमान परिदृश्य और मेरा नज़रिया...

जानते हैं सब, कि महामारी से पूरी दुनिया मात खा रही है,
फिर भी हमारे मन में, ये धर्म की बात आ रही है.....
पता है हमको, ये बीमारी फैल रही है जिस कदर,
चंद्र मिनटों में भी, हो सकता है सब-कुछ बेअसर
क्यों छूट रहे हैं वो, जिनके अपने हैं टूटे,
टूटे तो वो हैं, जिनसे उनके घरवालों के साथ हैं छूटे,
देश के नौजवान भी, जान की बाज़ी लगा रहे हैं,
पर सोचो, क्या हम देशवासी... उनके ज़रा भी काम आ रहे हैं ?
बस एक साथ ही तो चाहिए उनको, क्यूं न उनको वो दे दें,
एक जुट हो जाएं, एक ही भारत माँ के सारे बेटे.....
ज़रा सब्र तो करो, ज़रा सा धैर्य तो धरो.....
अभी सब खत्म हुआ नहीं है
रहा अगर यही ख़ैया हमारा
तो शायद वो वक्त भी दूर नहीं है.....
ज़्यादा कुछ नहीं, हमारा बस एक साथ ही था चाहा
इसमें भी हमने धर्म का ये खेल है रचाया ।

इस हद तक क्यूं हम पतित होते जा रहे हैं ?
क्यूं नहीं अपने धर्म के आगे... देश को चुन पा रहे हैं ?
अरे ! गर खेलना ही है तुमको, धर्म का ये खेल तो...
लड़ लेते हैं चलो पहले, इंसानियत से नज़रें फेर
अरे! इंसानियत जानते हो न ?
इंसान क्या है पहचानते हो न ?
नहीं लगता, मुझे कि शायद हो ये मुमकिन
दुनिया जाए भाड़ में, तू पहले धर्म गिन !
देखो.. समझो... बस इतना सा है उद्देश्य मेरा ...
एक जुट हो जाए, देश का हर धर्म आए जो अगला सवेरा....
जरूरत है अपने बच्चों की, हमारी भारत माँ को....
ज़रा सा सहारा स्वास्थ्य के रखवालों को दो.....
ज़रा सा... सिर्फ़ ज़रा सा प्यार हम, यदि अपने देश से जताएंगे,
हम सब, धर्म को छोड़ भारतीय कहलाएंगे...
एक बार फिर... हम सब भारतीय बन, खुल कर मुस्कराएंगे !!



“



शुभ्रा कुमारी

सुपुत्री जयनाथ यादव

कक्षा- सातवीं श्री सत्य साई विद्या विहार

मेरी नजर से...

वैसे तो लगता है आज हर कोई निराश पर देखो, अगर मेरी नजर से तो शेष है आसा
हर दिन की भाग-दौड़ में तुम्हारी परिवार के लिए नहीं था कुछ समय, पर अब समय मिला है तो क्यों हो रहे हो दुखी।

था नहीं समय अगर देखने के लिए टी.वी. तो क्यों न आज कर लो, ये भी ख्वाइश पूरी।
अगर कुछ शौक छूट गए थे पीछे, तो क्यों न उन्हें इस अवसर में पूरे कर लेते।
भाग-दौड़ की दुनिया में भूल गए थे जीना, तो चलो, आज सीख लें हर हाल में जीना।

वर्क इन आफिस की जगह, अब वर्क फ्राम होम कर लो, हर प्रतिकूल समय को, अपने अनुकूल कर करना सीख लो।

यूँ तो है ये दुनिया नकारात्मक विचारों से भरी, पर तुम इसे सकारात्मक नजरिए से भी जीना सीख लो।

”

कोरोना वायरस और प्रकृति

कोरोना से आज हर कोई ग्रस्त है
फिर भी प्रकृति अपने में मदमस्त है
जिन नदियों को करता था प्रदूषित इंसान
आज वो साफ है स्वच्छ है
जिन वायु में सदैव रहती थी मिली जानलेवा गैसों
आज वो प्राण वायु स्वच्छ है।
जो वसुन्धरा हो रही थी वंजर
आज वो पुनः हरी भरी हो रही है
जिन पावन नदियों में कचरा दिखता था ह्रदम
आज वहाँ तैरती मछलियाँ दिखती है पलपल।
जो जानवर इंसानों से डरते छुपते थे
आज वो बिदास सड़कों पर सैर करते हैं,
जो नभचर तरु की डालियों में छुपे बसेरा करते थे
आज वो उचाईयों को छूने की उड़ान भरते हैं।
इस मुश्किल घड़ी में हम सब मंद है, सुस्त है
लेकिन आज प्रकृति मुस्कराती मुक्त दिखती है
तो दोस्तो, जिस दुनिया को भाग दौड़ की दुनिया समझी
इस लाकडाउन में उसकी वास्तविक खूबसूरती है
कोरोना तो आया हमें सबक सिखाने
ताकि, प्रकृति का हम आदर करना सीख लें।





नदियों के लिए वरदान बना कोविड -19 लॉकडाउन

डॉ. कल्पना श्रीवास्तव, अमितरंजन पाण्डेय, डॉ. धर्म नाथ झा
सेंट्रल इनलैंड फिशरी रिसर्च इंस्टिट्यूट, 24 पन्नालाल रोड, इलाहाबाद
ईमेल : kalpana.cifri@gmail.com

कोरोना वायरस महामारी (COVID-19) तथा भारत में हुए लाकडाउन से हमें नदियों के जलीय पारिस्थितिकी तंत्र, तथा मानव समाज की प्रदूषण में भूमिका के बारे में बहुत सा सबक मिला है। लॉकडाउन के दौरान औद्योगिक कारखानों तथा व्यवसाय का बंद होने से वातावरण में बहुत से परिवर्तन आये। गर्मी कम होने के कारण बर्फ का पिघलना, घाटों का सुनसान होना और नदियों का चुपचाप बहना मानव जनित प्रदूषण के न होने से भारत में नदियों की नई स्थिति सामने आयी है। गंगा नदी के मध्य भाग (कानपुर, प्रयागराज, वाराणसी) में 2000-5000 भक्त प्रतिदिन स्नान करते थे। लॉकडाउन के दौरान वो सभी लोग घरों के अन्दर रहे। पहले औसतन 80-100 मुर्दे अंतिम संस्कार के लिए नदी के घाट पर पहुंचते थे उनकी संख्या 15-20 रह गई। शोध के अनुसार कानपुर में सर्वाधिक उद्योग नदी को प्रदूषित करती थी। लॉकडाउन के दौरान सभी उद्योग बंद रहे और हानिकारक रसायन पानी में नहीं जा सके इसके परिणाम स्वरूप 1/3 पोलूशन लोड कम हो गया। इस दौरान गंगा नदी में शहरों से निकलने वाला सीवेज ही जा रहा था।

गंगा नदी के जल की गुणवत्ता कुछ महत्वपूर्ण कारकों का अध्ययन लॉकडाउन के दौरान किया गया। गंगा नदी में लॉकडाउन से पहले व लाकडाउन के दौरान किए गए अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि लॉकडाउन अवधि में प्रयागराज में गंगा नदी में ऑक्सीजन 9 से 9.4 PPM, जैविक ऑक्सीजन मोग (BOD) 2.1 से 3.0 PPM, तक पायी गई ये दोनों ही कारक नदी के स्वस्थ परिवर्तन को दर्शाते हैं तथा जलीय जीवों के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करते हैं। केमिकल ऑक्सीजन डिमांड भी पहले के मुकाबले कम पायी गयी। पानी में घुलित ठोस पदार्थ उसमें रहने वाले सूक्ष्म जीव जन्तुओं की जैव विविधता को प्रभावित करते हैं। क्लोराइड से प्रदूषण का ज्ञान होता है कठोरता से पीने योग्य जल का अनुमापन करते हैं यह सभी कारक लॉकडाउन के दूसरे चरण में तो बड़े पर तीसरे चरण में नदी ने स्वयं को अपनी सुरक्षा तंत्र प्रणाली से पुनः साफ कर दिया और सभी पैरामीटर लाकडाउन से पहले वाले स्तर से भी अधिक अनुकूल हो गये अतः लाकडाउन के दौरान नदियों के जल की गुणवत्ता में प्रशंसनीय सुधार देखा गया। वाराणसी में घुलित ऑक्सीजन की मात्रा 8.1 से 8.7 PPM, तथा कानपुर में 8.0 PPM पाई गयी।

NMCG के कार्य को प्रकृति ने 3 हफ्ते में ही पूरा कर दिया। हम लोग नदी प्रदूषण पण्यंत्र रोकने के बजाय उसे नदी में लाते हैं फिर उसे साफ करते हैं। हमें नदी के संपूर्ण परितंत्र को जानना होगा कि नदी में मछलियां, जलीय पौधों की जनसंख्या व घनत्व, नदी के घाट तथा नदी के किनारे रहने वाले मछुवारा समुदाय का आर्थिक सामाजिक ढांचा सभी कुछ आपस में जुड़ा हुआ है। गंगा नदी के पानी की गुणवत्ता में सुधार तथा उसमें जलीय जीव जन्तुओं का परिवर्तित व्यवहार यह संदेश देता है, कि नदी का जीर्णोद्धार हम सफलतापूर्वक कर सकते हैं। साथ ही इस लॉकडाउन के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि बांध और औद्योगिक इकाई इसके सबसे बड़े शत्रु हैं। यदि नदी को निर्विघ्न बहने दिया जाए और औद्योगिक प्रदूषण को रोक दिया जाए तो नदी के पानी का 75% मानव के लिए आदर्श जल बन जायेगा। लॉकडाउन के दौरान स्वच्छ हुई नदियों में खेलती हुई डालफिन नदियों के स्वच्छ एवं स्वस्थ होने को प्रमाणित करती है।

इस दौरान मछलियां और जलीय जीव जन्तुओं का प्रजनन देखा गया तथा प्रयागराज में जलीय जीव जन्तुओं की जैव विविधता में भी वृद्धि पायी गई। अतः भारत में लॉकडाउन का सकारात्मक प्रभाव तथा प्रदूषण में आश्चर्यजनक सुधार प्रसन्नता का विषय है। हिलसा जैसी मछली का पुनः आगमन का संकेत मिला है तथा पहाड़ों में सुनहरी महाशीर सफलता पूर्वक बहुतायत में देखी जा रही है अर्थात मछली की कई प्रजातियां जो लंबे वर्षों से नहीं देखी गई वो गंगा नदी में देखी जा रही हैं।



सिद्धिमूलं प्रबन्धनम्
भा. प्र. सं. इन्दौर
IIM INDORE

ज्ञान शिखर



जीवन की धारा स्वच्छ गंगा –वाराणसी में



कानपुर में साफ़ हुई गंगा



प्रयागराज में आश्चर्यजनक गंगा व यमुना



हरिद्वार में पानी पीने योग्य हुआ



मेरठ में डॉलफिन का आना, गंगा के साफ़ होने का सूचक है



वाराणसी में नए मछली का आगमन



सिद्धिमूलं प्रबन्धनम्
भा. प्र. सं. इन्दौर
IIM INDORE

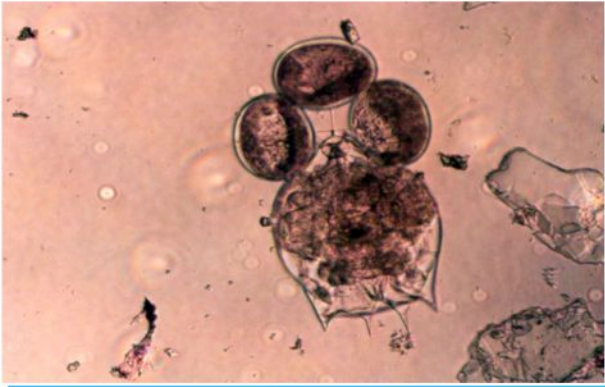
ज्ञान शिखर



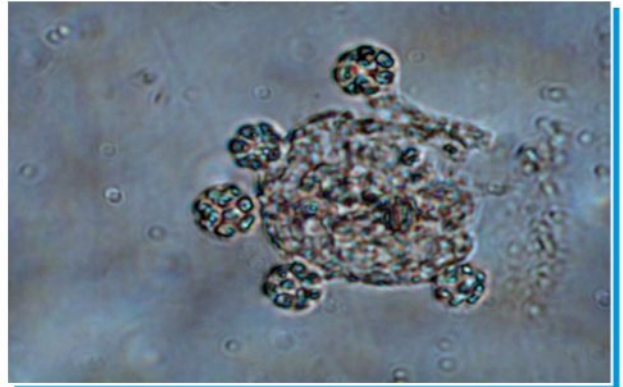
कलकत्ता की गंगा में हिलसा में वृद्धि



पहाड़ों में महाशीर प्रजनन में वृद्धि



गंगा नदी के सूक्ष्म जीव जंतु में बड़ा प्रजनन



गंगा नदी के सूक्ष्म पादप- शैवाल में बड़ा प्रजनन



दिल्ली में नाले से नदी बनी यमुना



नंदिता पांडे
पीजीपी 2019-21

काली स्याही

रोज़ लिखते हो तुम
मुझ पर
न जाने क्या क्या
जितना समझ पाते हो
बस लिख देते हो
अच्छा है
न लिखते तो शायद उलझ कर रह जाते
अच्छा है
की लिखकर खुद को आज़ाद पाते हो
रोकूंगी नहीं तुम्हे इसलिए
लिखो जो लिखना है
मिटा दूंगी बस मैं
वो जो मेरा सच नहीं
बस एक बात मान लेते अगर
हो सके तो
काली स्याही से मत लिखा करो
नहीं पसंद मुझे
बहुत गहरी है, मिटती नहीं ॥

मैं हूँ...

अभी जब इस नदी के किनारे
बैठे
ढलते सूरज को देखा
अपनी आँखों से
वो कुछ नारंगी लाल पीला सा आसमान
और मेरे सामने दूर तलक बस गहरा पानी
मानो बेचैन अंदर तक
पर शांत
और जब इस किनारे
एक तेज़ हवा का झोंका सा आया
एक सनसनाहट सरसराहट
और फिर वही शांति दूर तलक
जब छोटी छोटी मछलियाँ
खेल खेल में
मेरे पैरों से टकराकर भागतीं
तैरती मगन
उसी असीम पानी में
तब लगा ज़िंदा हूँ मैं
मैं ही तो हूँ
कभी सूरज के नारंगी से रंग में
पानी की अशांत गहरायी में
उस सनसनाहट में
उस सीमित अनन्तता में
मैं ही तो हूँ ॥



कोरोना कालखंड में बदलते सामाजिक, आर्थिक एवं पारिवारिक परिदृश्य



मुकेश चौधरी

सामान्य कर्तव्य सहायक
पी जी पी विभाग

कोरोना महामारी का संकट संभवतः विश्व इतिहास के सबसे महान संकट के रूप में जाना जायेगा जिसने पूरी दुनिया को एक साथ प्रभावित किया है और विश्व के सभी देशों की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं पारिवारिक परिस्थितियों को बुरी तरह झकझोर दिया है। सभी देश अपनी पूरी क्षमता से इस संकट से जूझने का प्रयास कर रहे हैं। इस समस्या से निपटने के लिए विश्व के सभी देशों ने लॉकडाऊन या तालाबंदी लागू की। सभी नागरिकों को अपने-अपने घरों में ही रहने की हिदायत दी गई। सभी प्रकार की गतिविधियों पर विराम लग गया और लोग अपने घरों में कैद हो गये। लॉकडाऊन का मुख्य उद्देश्य संक्रमण को फैलने से रोकना था ताकि इसके कारण बड़े स्तर पर जनहानि न हो तथा लाखों करोड़ों लोगों का जीवन बचाया जा सके।

हमारे देश में भी लॉकडाऊन लागू किया गया और देश के नागरिकों ने संयमित एवं अनुशासित तरीके से इसका पालन किया। इस लॉकडाऊन ने कई प्रकार से हमारे जीवन को प्रभावित

किया या दूसरे शब्दों में ये कहें कि इसके सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार के प्रभाव जनमानस पर पड़े। फिर चाहे वह धनावान वर्ग हो, मध्यम वर्ग हो या फिर निम्न वर्ग हो। लेकिन इस लॉकडाऊन से जो वर्ग सबसे बुरी तरह प्रभावित हुआ है वह है श्रमिक वर्ग। लॉकडाऊन ने इसके जीवन की दिशा ही बदल दी। लॉकडाऊन में श्रमिकों ने कुछ समय तक तो जैसे तैसे एक ही स्थान पर रह कर गुजारा किया किन्तु उसके पश्चात् उनकी जमा-पूंजी समाप्त हो गयी और उन्हें भूखे रहने पर मजबूर होना पड़ा। जब उनके मकान मालिकों ने उन्हें रखने से इंकार कर दिया तो वे बेघर हो गये और उन्हें अपने गांवों और शहरों की ओर लौटने पर विवश होना पड़ा। लॉकडाऊन में आवागमन के साधन उपलब्ध न होने के कारण लौटना उनके लिये इतना आसान न था किन्तु यह उनकी मजबूरी थी अतः लाखों की संख्या में श्रमिक पैदल, सायकल या अन्य साधनों का सहारा लेकर कष्ट सहते हुए अपने गांवों और शहरों तक पहुँचे। ज्यादातर श्रमिक तो पैदल ही निकल पड़े थे। कोरोना काल में देश के श्रमिक वर्ग का यह सबसे बड़ा पलायन था। उनकी इस जीवटता ने देश को सोचने पर विवश कर दिया। जब उन्हें आवागमन का कोई साधन नहीं मिला तो उन्होंने किसी और पर निर्भर न रहते हुए अपने पैरों पर ही निर्भर रहना उचित समझा और लम्बी-लम्बी दूरियाँ अपने कदमों से ही नाप डालीं। उनकी यह हज़ारों किलोमीटर की पैदल यात्राएँ ही हमें आत्मनिर्भरता का सन्देश दे गईं। कोरोना काल में यह एक बहुत बड़ा परिवर्तन हमें देखने को मिला।

इसी कोरोना काल हमें सामाजिक एवं पारिवारिक स्तर पर भी कई परिवर्तन देखने को मिले। कई सामाजिक संस्थाओं ने जरूरतमन्दों को भोजन सामग्री, राशन, दवाईयाँ एवं अन्य आवश्यक वस्तुएँ पहुँचाने के लिए अपने-अपने स्तर पर प्रयत्न किए और समाज सेवा में अपना उत्कृष्ट योगदान दिया। जहाँ देश के कई बड़े औद्योगिक घरानों ने प्रधानमंत्री राहत कोष में करोड़ों रूपयों की सहायता राशि का दान किया वहीं देश की जनता ने भी अपने सामर्थ्य के अनुसार सहायता कोष में राशि जमा करवा कर राष्ट्रीय सेवा में अपना योगदान दिया। राजमार्गों पर पैदल जा रहे प्रवासी श्रमिकों को रास्ते में जगह जगह लोगों ने चाय, नाश्ता, भोजन, पानी यहाँ तक की जूते चप्पल भी उपलब्ध कराए। स्वास्थ्यकर्मियों, पुलिस एवं प्रशासन के अधिकारियों व कर्मचारियों ने इस संकट से निपटने के लिए अपनी जान की बाजी तक लगा दी।



जहाँ तक पारिवारिक स्तर पर परिवर्तन की बात है तो हम सभी ने यह अनुभव किया कि लम्बे समय तक घरों में रहने के कारण लोगों में आपसी सहयोग, मेलजोल एवं एक दूसरे के कष्टों को समझने की भावना विकसित हुई। लोग अपने पास पड़ोस में रहने वालों का ध्यान रखने लगे। परिवार के सदस्यों में प्रेम और सौहार्द की भावना बढ़ी। परिवार के सभी छोटे बड़े सदस्यों, बुजुर्ग एवं महिलाओं को एक साथ रहने का अवसर प्राप्त हुआ। साथ-साथ खाने-पीने, वार्तालाप करने एवं मनोरंजन करने से आपसी सम्बन्ध और प्रगाढ़ हुए। जो लोग लम्बे समय से अपने परिवार से दूर रह रहे थे, उन्हें परिवार के अच्छा समय व्यतीत करने का अवसर प्राप्त हुआ। कुल मिलाकर इस अवधि में लोगों ने अपने जीवन की एकरसता से परे एक नए जीवन को जीने का अनुभव प्राप्त किया।

जहाँ इस कोरोना काल में कई सकारात्मक बातें देखने को मिलीं, वहीं कुछ नकारात्मक परिवर्तन भी देखने को मिले। लम्बे समय तक घरों में कैद रहने के कारण कई लोग अवसाद ग्रस्त हो गये। अकेले रहने वाले कई लोगों ने आत्महत्या करने जैसी कोशिशें कीं। पति-पत्नी एवं परिवार के अन्य सदस्यों में वाद विवाद, लड़ाई झगड़े बढ़े। महिलाएँ घरेलू हिंसा का शिकार हुईं। समाचार पत्रों में प्रकाशित खबरों के अनुसार इस अवधि में पारिवारिक विवादों से सम्बन्धित लगभग 92,000 मामलों की शिकायतें विभिन्न स्तरों पर दर्ज हुईं।

आर्थिक स्तर की अगर हम बात करें तो, देश को काफी नुकसान हुआ। लम्बे समय तक आर्थिक एवं कारोबारी गतिविधियाँ बन्द रहने के कारण देश का आर्थिक विकास एक तरह से थम गया। उद्योग-धन्धों को भारी नुकसान उठाना पड़ा फिर चाहे पर्यटन उद्योग हो, होटल इण्डस्ट्री हो, विमान सेवाएं हो या फिर खेल जगत या सिनेमा व मनोरंजन उद्योग हो। कई छोटे व मध्यम स्तर के कल कारखाने बन्द होने के कगार पर पहुँच गए। दुकानदारों को खासा नुकसान हुआ। ग्राहकी ना होने के कारण उनकी आमदनी बन्द हो गयी और उनके लिए अपने परिवार का पेट पालना मुश्किल हो गया। रेहड़ी और ठेला लगाने वालों के सामने तो जीवन मरण का प्रश्न उत्पन्न हो गया। शिक्षा के क्षेत्र में स्कूलों में अध्ययन कार्य जरूर प्रभावित हुआ किन्तु इससे अध्ययन व अध्यापन में आधुनिक तकनीक के प्रयोग को बढ़ावा मिला। स्कूलों व कालेजों में ऑनलाइन कक्षाओं के माध्यम से पढ़ाई हुई तथा छात्रों व अध्यापकों को घर बैठे पढ़ने और पढ़ाने का अवसर प्राप्त हुआ।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि इस कोरोना संकट ने पूरे विश्वको एवं हमारे देश को हर तरह से प्रभावित किया और हमें अलग तरह से सोचने तथा रहन सहन के नए तौर-तरीके अपनाने के लिए प्रेरित किया। अब हमारा भी यह कर्तव्य है कि हम संक्रमण मुक्त जीवन जीने के लिए अनुशासित रहें और आवश्यक सावधानियों का पालन करें।

हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि हमारे जीवन के साथ हमारे परिवार के सदस्यों का भी जीवन जुड़ा है। इसलिये अगर हम सभी व्यक्तिगत रूप से सावधानियाँ रखते हुए अनुशासित ढंग से अपने पारिवारिक एवं सामाजिक दायित्वों का निर्वाह करें तो आगे आने वाले समय में भी इस प्रकार के किसी भी संकट का सफलतापूर्वक सामना कर सकेंगे।



सिद्धिमुलं प्रबन्धनम्
भा. प्र. सं. इन्दौर
IIM INDORE

ज्ञान शिखर



झलकियाँ

उड़ान 2019



झलकियाँ

उल्लास 2019



उल्लास कार्यक्रम के दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति



झलकियाँ

एकता अखण्डता शपथ समारोह 2019



प्रोफेसर हिमांशु राय, निदेशक द्वारा संबोधन



कर्मल गुरुराज गोपीनाथ पामिडि (सेवानिवृत्त), मुख्य प्रशासनिक अधिकारी द्वारा संबोधन

झलकियाँ

आउटसोर्स एवं बागवानी



दिनांक 31 अक्टूबर 2019 को प्रोफेसर हिमांशु राय, निदेशक द्वारा स्पिरिचुअल गार्डन का उद्घाटन



सिद्धिमुलं प्रबन्धनम्
भा. प्र. सं. इन्दौर
IIM INDORE

ज्ञान शिखर



झलकियाँ

नोटिंग एवं ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता



हिन्दी परखवाड़ा 2019 के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताएं

झलकियाँ

पीजीसीपीएफ कार्यक्रम 2019





सिद्धिमुलं प्रबन्धनम्
भा. प्र. सं. इन्दौर
IIM INDORE

ज्ञान शिखर



झलकियाँ

पूर्व छात्र पुनर्मिलन 2019



झलकियाँ

प्रबोधन 2019





सिद्धिमुलं प्रबन्धनम्
भा. प्र. सं. इन्दौर
IIM INDORE

ज्ञान शिखर



झलकियाँ

फुट प्रिंट 2019



झलकियाँ

सीसीबीएमडीओ उद्घाटन





सिद्धिमुलं प्रबन्धनम्
भा. प्र. सं. इन्दौर
IIM INDORE

ज्ञान शिखर



झलकियाँ

स्थापना दिवस समारोह 2019



झलकियाँ

स्वतंत्रता दिवस समारोह 2020





सिद्धिमुलं प्रबन्धनम्
भा. प्र. सं. इन्दौर
IIM INDORE

ज्ञान शिखर



झलकियाँ

हिन्दी टाइपिंग प्रशिक्षण सत्र



सहायक निदेशक श्रीमती उषा शर्मा, हिन्दी शिक्षण योजना नई दिल्ली द्वारा प्रशिक्षण

झलकियाँ

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा पुरस्कार



लघु नाटिका में द्वितीय पुरस्कार

गीतगायन में प्रथम पुरस्कार श्री गौरव त्रिवेदी



सिद्धिमुलं प्रबन्धनम्
भा. प्र. सं. इन्दौर
IIM INDORE

ज्ञान शिखर



जीएमपीई बैच-6 वर्ष 2019



जीएमपीई बैच का उद्घाटन करते हुए श्री आयुष गुप्ता, सीजीएम, गेल इंडिया लिमिटेड एवं संकाय सदस्य



जीएमपीई बैच-6 प्रतिभागीगण



वित्तीय लेखा सत्र समान प्रो. हरि प्रसाद एवं प्रतिभागीगण



विपणन प्रबंधन सत्र समापन प्रो. जयसिंहा के. आर. एवं प्रतिभागीगण



पीआईडी सत्र समापन प्रो. कजरी मुखर्जी एवं प्रतिभागीगण



पीआईडी सत्र समापन प्रो. जतिन पांडे एवं प्रतिभागीगण



मात्रात्मक तकनीक



माइक्रो इकोनामिक्स सत्र समापन प्रो. स्नेहा थपलियाल एवं प्रतिभागीगण



झलकियाँ

एमडीपी



प्रो. प्रशांत सलवान द्वारा उद्बोधन



पूर्व मेयर एवं वर्तमान विधायक सुश्री मालिनी गौड़ के साथ संवाद करते हुए मंगोलिया के गवर्नर



दिनांक 06 से 10 जनवरी 2020 लोकल गवर्नेंस पर मंगोलिया के 25 गवर्नेंस के लिए एमडीपी



दिनांक 06 से 10 जनवरी 2020 लोकल गवर्नेंस पर मंगोलिया के 25 गवर्नेंस के लिए एमडीपी



दिनांक 02 से 06 मार्च 2020 महिला उद्यमियों एवं स्टार्ट-अप्स के प्रमोशन पर एमडीपी



प्रो. प्रशांत सलवान, माननीय न्याधीश श्री एस सी शर्मा एवं प्रोफेसर हिमांशु राय, निदेशक



जीएमपीई बैच-6 समूह छायाचित्र



झलकियाँ

वर्चुअल राजभाषा कार्यान्वयन समिति बैठक 2020



प्रोफेसर हिमाँशु राय, निदेशक द्वारा कार्यक्रम की अध्यक्षता



मुख्य प्रशासनिक अधिकारी द्वारा समीक्षा



सदस्य सचिव द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक संचालन



झलकियाँ

प्रमुख आयोजन



दिनांक 09 जनवरी 2019 यूनिवर्सिटी ऑफ नार्थ टेक्सास एवं आईआईएम इंदौर के बीच समझौता ज्ञापन



दिनांक 03 दिसंबर 2019 यूनिवर्सिटी क्वींसलैंड एवं आईआईएम इंदौर के बीच समझौता ज्ञापन



दिनांक 08 नवंबर 2019 एमआईपी पोलीटेकनिको दी मिलानो ग्रेजुएट स्कूल ऑफ बिजनेस, इटली एवं आईआईएम इंदौर के बीच समझौता ज्ञापन



प्रोफेसर हिमाँशु राय, निदेशक एवं मुख्य अतिथि श्री जोयदीप सेनगुप्ता, वरिष्ठ पार्टनर मैकिंसे द्वारा पीजीपी, पीजीपीएचआरएम, आईपीएम4 एवं एफपीएम 2020 बीच का वर्चुअल शुभारम्भ



झलकियाँ

हिन्दी दिवस समारोह 2019



प्रोफेसर हिमांशु राय, निदेशक भा.प्र.सं. इंदौर द्वारा संबोधन



मुख्य प्रशासनिक अधिकारी कर्नल गुरुराज गोपीनाथ पामिडि (सेवा निवृत्त) द्वारा संबोधन



श्री राजेश श्रीवास्तव द्वारा कार्यक्रम का संचालन



श्री जयनाथ यादव द्वारा स्वागत उद्बोधन



विशिष्ट अतिथि श्री ए.पी. मिश्रा, सी. एम. डी. (सेवा निवृत्त) यूपीपीसीएल का संबोधन



मुख्य अतिथि श्री मनोज कुमार श्रीवास्तव, अतिरिक्त मुख्य सचिव, मध्य प्रदेश शासन व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए



विशिष्ट अतिथि श्री ए.पी. मिश्रा को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए प्रोफेसर हिमांशु राय, निदेशक भा.प्र.सं. इंदौर



मुख्य अतिथि श्री मनोज कुमार श्रीवास्तव, अतिरिक्त मुख्य सचिव, म.प्र. शासन को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए प्रोफेसर हिमांशु राय, निदेशक भा.प्र.सं. इंदौर



हिन्दी दिवस समारोह 2019



मुख्य अतिथि श्री मनोज कुमार श्रीवास्तव, अतिरिक्त मुख्य सचिव, मध्य प्रदेश शासन एवं प्रोफेसर हिमांशु राय, निदेशक द्वारा पुरस्कार वितरण



मुख्य अतिथि श्री मनोज कुमार श्रीवास्तव, अतिरिक्त मुख्य सचिव, मध्य प्रदेश शासन एवं प्रोफेसर हिमांशु राय, निदेशक द्वारा पुरस्कार वितरण



दर्शक दीर्घा



सम्मानिय अतिथियों के कर कमलों द्वारा हिन्दी पत्रिका ज्ञान शिखर के चतुर्थ अंक का विमोचन



विशिष्ट अतिथि श्री ए.पी. मिश्रा, सी. एम. डी. (सेवा निवृत्त)
यूपीपीसीएल का आगमन



मुख्य अतिथि श्री मनोज कुमार श्रीवास्तव, अतिरिक्त मुख्य सचिव, म.प्र. शासन को शाल भेंट करते हुए प्रोफेसर हिमांशु राय, निदेशक भा.प्र.सं. इंदौर



झलकियाँ

हिन्दी दिवस समारोह 2019



मुख्य अतिथि श्री मनोज कुमार श्रीवास्तव, अतिरिक्त मुख्य सचिव, मध्य प्रदेश शासन द्वारा संबोधन



विशिष्ट अतिथि श्री ए.पी. मिश्रा, सी. एम. डी. (सेवा निवृत्त) यूपीपीसीएल को शाल भेंट करते हुए मुख्य प्रशासनिक अधिकारी कर्नल गुरुराज गोपीनाथ पामिडि (सेवा निवृत्त)



दर्शक दीर्घा



दर्शक दीर्घा



दर्शक दीर्घा



मुख्य अतिथि श्री मनोज कुमार श्रीवास्तव, अतिरिक्त मुख्य सचिव, मध्य प्रदेश शासन द्वारा पुरस्कार वितरण



हिन्दी प्रतियोगिता के दौरान निर्णायक मंडल सर्वश्री जयनाथ यादव, रा.भा. अधिकारी, रंतिदेव शर्मा, अधिकारी एवं गोपाल सिंह जादौन, सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष



हिन्दी प्रतियोगिता के दौरान निर्णायक मंडल श्री जयनाथ यादव, रा.भा. अधिकारी, सुश्री खुशबू जैन, श्री अजय दाश एवं श्री राजेश श्रीवास्तव



वर्चुअल हिन्दी कार्यशाला आयोजन



वर्चुअल हिन्दी कार्यशाला डॉ. राजीव रावत आईआईटी खड़गपुर द्वारा



वर्चुअल हिन्दी कार्यशाला डॉ. राजीव रावत आईआईटी खड़गपुर द्वारा

एनएचडीसी हिन्दी कार्यशाला में श्री जयनाथ यादव का वर्चुअल व्याख्यान



भा.प्र.सं. इन्दौर में आयोजित हिन्दी कार्यशाला दिसंबर 2019

रा.भा.का. समिति की 19वीं बैठक



हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित हिन्दी प्रतियोगिता

हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित हिन्दी प्रतियोगिता

समाचार पत्रों की सुर्खियाँ

जन-समुदाय को एकता के सूत्र में पिरोने वाला तार है हिंदी

हिंदी को जनता, राष्ट्रपति और समाज की भाषा माना जाता है। जनता के बीच हिंदी एक अत्यंत महत्वपूर्ण तार है। यह अनेक भाषाओं के बीच एकता के सूत्र के रूप में कार्य करता है।

भाषाओं को सटीक रूप से स्पष्ट करने की अत्युत्तम शक्ति

हिंदी को सटीक रूप से स्पष्ट करने की अत्युत्तम शक्ति है। यह अनेक भाषाओं के बीच एकता के सूत्र के रूप में कार्य करता है।

बजट में नजर से नई टेक्नोलॉजी और रिसर्च के खुलने वाले रास्ते

नई टेक्नोलॉजी और रिसर्च के खुलने वाले रास्ते। बजट में नजर से नई टेक्नोलॉजी और रिसर्च के खुलने वाले रास्ते।

शिवरात्रि पर...50 किलो चांदी के शीशमहल में विराजे कांटाफोर्ड शिव, 300 साल पुराने शिवलिंग के 'जड़े' का दर्शन करने आमजन के लिए खुले आईआईएम के द्वार



आईआईएम का शिवरात्रि पर 50 किलो चांदी के शीशमहल में विराजे कांटाफोर्ड शिव, 300 साल पुराने शिवलिंग के 'जड़े' का दर्शन करने आमजन के लिए खुले आईआईएम के द्वार।

भगवान गणेश सिखाते हैं प्रबंधन

भगवान गणेश की बुद्धिमत्ता बताती है कि उन्होंने हमेशा किस प्रकार कठिन परिस्थितियों को भी प्रभावी ढंग से प्रसिद्ध किया और अपनी बुद्धि, ज्ञान और संतुलित आचरण के साथ समाधान खोजा। इसी के साथ उनका बड़ा सिर जगत्कला, ध्यान, विचारशीलता, मानसिक और भावनात्मक स्थिरता का प्रतीक है। उनके चार हाथ चार

पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का प्रतिनिधित्व करते हैं अर्थात् कोई भी निर्णय लेने से पहले ले सका नैतिकता, अर्थव्यवस्था, भौतिकता लाभों के दृष्टिकोण से विश्लेषण करना और साथ दीर्घकालिक आध्यात्मिक और सामाजिक लाभ पर भी अनुमान लगाना चाहिए।

—हिमांशु राय, निर्देशक, भारतीय प्रबंधन संस्था, इंदौर

उद्योग आत्मनिर्भरता के सूत्र से ही बढ़ेगी रफ्तार

भारतीय उद्योगधरम तीन खंड में विभाजित है। यह खंड देश के अर्थतंत्र में अपनी महत्वपूर्ण हिस्सेदारी रखते हैं। कुल का हिस्सा 16 प्रतिशत, उद्योग का 31 प्रतिशत और सेवा उद्योग का हिस्सेदारी 53 प्रतिशत है।

मध्यप्रदेश: आत्मनिर्भर बनाने में सरकार करे सहयोग

मध्य प्रदेश सरकार ने आत्मनिर्भर बनाने में सहयोग देने के लिए उद्योगों को प्रोत्साहित करने के लिए एक योजना शुरू की है।

उपलब्धि आईआईएम इंदौर जेसमेंट 2019-20 में 160 से अधिक रिकॉर्ड्स में भाग लिया

आईआईएम के जेसमेंट में 50 लाख प्रतिवर्ष का पैकेज

आईआईएम इंदौर ने जेसमेंट 2019-20 में 160 से अधिक रिकॉर्ड्स में भाग लिया। यह एक बड़ी उपलब्धि है।

वात पदार्थन को इंदौर स्थित भारतीय प्रबंधन संस्थान में गुजाल्ट रूफ्स पर शूटस चेंबर की हुई शुरूआत

अब जल की खपत कम करने पर काम करेगा आईआईएम

आईआईएम इंदौर में जल की खपत कम करने पर काम किया जाएगा। यह एक महत्वपूर्ण पहल है।

विद्युत मुक्त

विद्युत मुक्त बनाने के लिए कई प्रयास किए जा रहे हैं। यह एक महत्वपूर्ण पहल है।

आइआईएम इंदौर में मंदद करेगा आईआईएम

आईआईएम इंदौर में मंदद करेगा आईआईएम। यह एक महत्वपूर्ण पहल है।

उद्योगों पर होने वाले प्रभाव पर आईआईएम इंदौर ने तैयार किया रोडमैप

प्रदेश को आर्थिक रफ्तार देने के लिए लॉकडाउन में ढील जरूरी

आईआईएम इंदौर ने उद्योगों पर होने वाले प्रभाव पर एक रोडमैप तैयार किया है। यह एक महत्वपूर्ण पहल है।

कोविड-19 के माहौल में स्टूडेंट्स के लिए प्लानिंग, प्रैक्टिस और पेशांस जरूरी

आइआईएम के फैकल्टी और परिसर बंद रहे हय ऐसे ही नहीं तैयार करते बेस्ट मैनेजर: मैस से सफाई तक का संभाला जिम्मा

आईआईएम इंदौर कोविड-19 के माहौल में स्टूडेंट्स के लिए प्लानिंग, प्रैक्टिस और पेशांस जरूरी। यह एक महत्वपूर्ण पहल है।



रुद्रांश कंथारिया

सुपुत्र श्री जिगर कंथारिया, अधिकारी

इस मंज़िल के हम अवरिल राही!



मंज़िले यूँ ही नहीं मिलती, ओ अवरिल राही!
उसे अमल करती स्वेद की स्याही।

तिनका तिनका चुन, मन की तरंगों को क्रियात्मक रूप देना पड़ता है,
दृढ़ निश्चय और उध्यम की लौ को हृदय में उज्वलित करना पड़ता है।

काँटों से परिपूर्ण इस पथ पर,
आशावाद से संपूर्ण करना तू यह सफर।

जिंदगी के रंगमंच के प्रत्येक शिविर पर इम्तहान होता है,
जूझने वालों के पथ को सौभाग्य चुनता है।

पराक्रम और निरंतर परिश्रम उत्कृष्ट तत्व है जीवन में,
सहिष्णुता के समाकलन से तू प्रवेश कर प्रतिष्ठा नगरी में।

सपनों को साकार करती मेरे स्वेद की यह स्याही,
क्योंकि मंज़िलें यूँ ही नहीं मिलती, ओ अवरिल राही!



भव्या मिश्रा

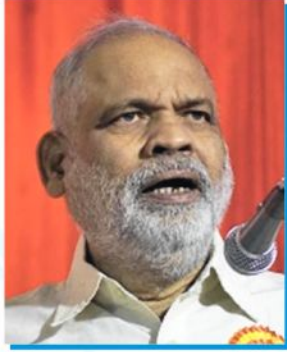
अकादमिक सहयोगी

लाल भारत- शहीदों को समर्पित

माँ ने किया तिलक,
शौर्य का वो रंग लाल है,
मोहब्बत के दिन,
भावना का वो रंग लाल है।
आक्रोश की आंखों का,
भर्त्सना का वो रंग लाल है,
शांति के नाटक का,
खतरे का वो रंग लाल है।
लहू दे गए निर्दोष,
कुर्बानी का वो रंग लाल है,
चित को भाता जो अब,
बदले का वो रंग लाल है।
हर घर हो तैयार एक,
जोश का वो रंग लाल है,
उस पार है होली इस बार,
गुलाल का वो रंग लाल है।
ना-समझ अब समझ जाएं,
वार्ता का वो रंग लाल है,
वक्रत गुजर चुका अब,
कपोत का वो रंग लाल है।
अब सूर्य ढलेगा नहीं,
ऊर्जा का वो रंग लाल है,
अब यही है मंजूर तुम्हें तो सही,
जंग का वो रंग लाल है।



हमें प्रकृति से जोड़ने के लिए शुक्रिया सर



अशोक तोमर
मीडिया सलाहकार

आईआईएम, इंदौर के कैम्पस में मैं पहले कभी नहीं रुका था। कोविड-19 महामारी फैलने के बाद से यहां रहते हुए मैंने जो चीजें देखी हैं वो पहले कभी नहीं देखी थी।

पेड़ों पर चिड़ियों का चहचहाना, सड़क पर गिलहरियों का खेलना और मोर का नाचना। यह सब मेरे लिए नया था। यह एक खुलासा भी था कि हम मनुष्यों ने एक ऐसी दुनिया में उनका प्रवेश रोक दिया है जो उनका भी है, समान रूप से।

पृथ्वी पर किसी भी अन्य जगह की तरह लॉकडाउन से आईआईएम कैम्पस में भी सब कुछ ठहर गया। सारी गतिविधियां रुक गईं पर कुछ ही समय में हमारे डायरेक्टर सक्रिय थे – ऑनलाइन कक्षाएं शुरू हो गईं। सरकार के निर्देशों के अनुपालन में अन्य आवश्यक गतिविधियां भी शुरू कर दी गईं।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और ऐसे में 'फिजिकल डिसटेंसिंग' मानते हुए किसी भी गतिविधि की कल्पना नहीं की जा सकती है। पर हमारे डायरेक्टर ने स्वेच्छा से कुछ भी करने की आजादी दी और इसमें शामिल था, बागवानी, पौधों में पानी डालना या फिर शेल्टर हाउस में रखे गए कुत्तों का अलग-अलग ख्याल रखना।

मुझे ये आईडिया पसंद थे पर मेरा उत्साह साझा करने के लिए बमुशकिल कोई था। इससे मैं निराश हो गया।

अपने कमरे से बाहर निकलते हुए मैंने जो कुछ देखा उससे मेरा उत्साह काफी बढ़ गया। अगले ही क्षण मेरा उत्साह नीले आसमान की किसी पक्षी की तरह बढ़ गया। झाड़ियों पर नाचती तितलियों ने मेरे समक्ष एक अनदेखा दृश्य प्रस्तुत किया जो बेशक दुनिया के सर्वश्रेष्ठ डिजाइनर – यानी प्रकृति की कृति थी। तितलियों के पंख पर जो सुंदर डिजाइन बनी थी वह भी किसी कलाकृति से कम नहीं थी।

अगले आधे घंटे तक ऐसा लगा जैसे मैं किसी नई दुनिया में हूं। मेरा नया जन्म हुआ हो। इस बार मैं प्रकृति की गोद में था। लॉक डाउन के कारण पिछले कुछ दिनों से मैं अपने परिचितों और मित्रों से ऐसे अनुभव सुन रहा हूं जो पहले कभी नहीं सुना। उदाहरण के लिए, जलंधर के लोग हिमाचल प्रदेश में धौलाधर पहाड़ियों की रेंज देख रहे हैं।

जब मैं बच्चा था तो एक बार मैंने एक बूढ़े आदमी से पूछा था कि भगवान किसे कहते हैं? उनका जवाब मुझे आज भी याद है और उन्होंने जो कहा था वह आज भी मेरे कानों में गूंजता है। उन्होंने कहा – वह आदमी जो प्रकृति से जितना लेता है उससे ज्यादा वापस करता है।

लॉकडाउन के काफी दिन हो चुके हैं और उसका असर दिख रहा है। जमाने बाद आसमान बिल्कुल साफ, नीले नजर आ रहे हैं। भारत के लगभग हरेक शहर में हवा की गुणवत्ता (एक्यूआई) अब 'परफेक्ट' श्रेणी में है। गंगा का पानी साफ हो गया है। ओजोन की पतली हो रही परत में सुधार के संकेत हैं।

हर दिन ऐसा कोई ना कोई तथ्य मेरा सामने आता है और इस महामारी के मद्देनजर यह सब आंखें खोलने से कम की भूमिका नहीं निभाते हैं। मानव इतिहास में पहली बार इस महामारी ने गरीबों के लिए दुख और तबाही मचाई है और दुनिया भर में यह तबाही अमीरों के कारण है।

हम भारतीयों की प्रतिरक्षा प्रणाली दुनिया भर के कुछ सबसे संपन्न देशों के लोगों के मुकाबले अच्छी है। प्रकृति को पता है कि उसे नई ताजगी चाहिए हो तो क्या करना है। मानवीय हस्तक्षेप ने हमेशा उसे परेशान किया है।

आज की स्थिति में चिकित्सक और हेल्थकेयर वर्कर्स को उनके बेजोड़ काम और बलिदान के साथ काम के प्रति समर्पण के लिए और ज्यादा सम्मान देने की आवश्यकता है।

अब अपने डायरेक्टर की पहल पर वापस आता हूं – इससे मैं आईआईएम इंदौर के कैम्पस में अमरुद के पांच पेड़ों को गोद लेने के लिए



प्रेरित हुआ। दूसरे लोग भी एक ऐसे अभिनव प्रयास के भाग बने जिसके बारे में कोई शिक्षा संस्थान लॉक डाउन के दौरान सोच सकते हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान विन्सटन चर्चिल ने एक अच्छा बयान दिया था, एक अच्छे संकट को कभी भी बेकार मत जाने दीजिए। एक छोटा कदम ढेर सारे मौकों के दरवाजे खोल सकता है। मुझे यकीन है कि अगर हम सोच समझ कर काम करें तो यह मानवता के इतिहास में सबसे अच्छा समय हो सकता है। यह समय सहायता के हाथ बंटाने का है। खासकर उन्हें जो कम भाग्यशाली हैं और रोज कमाते, रोज खाते हैं।

आइए, हम सब प्रकृति की रक्षा का प्रण लें। प्रकृति को मौका दें कि वह खुद को फिर से तरोताजा कर सके। इससे मुझे अमेरिकी संरक्षणवादी, स्टीवार्ट उडाल की याद आती है। उन्होंने कहा था, 'वायु, जल, जंगल और वन्य जीवों की रक्षा करने की योजना असल में मनुष्यों की रक्षा करने की योजना होती है।'

हमें प्रकृति से जोड़ने के लिए शुक्रिया, सर।

इस लॉकडाउन ने हमें जीना सीखा दिया



अजय कुमार दाश

पहले हम ज्वाईंट फेमिली से भागते थे अब हमें याद आने लगा कि कहाँ हम ज्वाईंट फेमिली में रहते थे। इस लॉकडाउन ने हमें जीना सीखा दिया,

पहले हम गाँव छोड़कर शहर की ओर जा बसे अब हमें वो गाँव की यादें सताने लगी। इस लॉकडाउन ने हमें जीना सीखा दिया,

पहले हम सोचते थे मम्मी दिन-भर खाली बैठी रहती हैं अब हमें एहसास हुआ वो तो दिन-भर हमारी सेवा करने में लगी रहती है। इस लॉकडाउन ने हमें जीना सीखा दिया,

पहले हम गरीब को इस देश का बोझ मानते थे अब हम उन्हें हमारे समाज का एक हिस्सा मानते हैं। इस लॉकडाउन ने हमें जीना सीखा दिया,

पहले हम छुट्टी के दिन घर पर आलस में रहते हुए थोड़ी-थोड़ी बातों पर गुस्सा करते थे अब हम रोज घर पर मिल-बांटकर काम सँभालते हैं। इस लॉकडाउन ने हमें जीना सीखा दिया,

पहले हम पुलिस, डॉक्टर, सफाईवाला को शक की नज़र से देखते थे अब हम इनके काम पर गर्व करने लगे और सरहद में तैनात फौजियों के बाद इनको भगवान की तरह पूजने लगे। इस लॉकडाउन ने हमें जीना सीखा दिया,

पहले हम जीने के लिए दुनिया की हर चीज समेटना चाहते थे अब हमें थोड़ी-सी चीज में भी गुजरा करना आ गया। इस लॉकडाउन ने हमें जीना सीखा दिया,

पहले हम खुद के लिए जीते थे और इंसानियत दूसरों में ढूँढते थे अब हम दुसरो के बारे में भी सोचने लगे और इंसानियत समझने लगे।



मनीष रमनानी
अकादमिक सहयोगी

उत्तम मार्ग

श्री हरि का दिव्य गीत है जो,
सृष्टि सृजन संगीत है जो,
जिसकी लय में संसार बंधा,
नित ज्ञान की है जो सरस सुधा।
है आत्म का परम ज्ञान जिसमें,
परमात्मा की परिभाषा है,
यह कृति नहीं केवल साहित्य,
यह सत्य की पराकाष्ठा है।
है प्रभु के श्रीमुख से निकली,
यह जीवन मूल्यों की सरिता,
युगों-युगों से मार्ग दिखाती
सबको, श्रीमद् भागवत गीता।
कर्तव्य पथ से हुए जब पार्थ भ्रमित,
युद्ध परिणाम के भय से व्याथित,
तब धर्म का मार्ग दिखाने को,
मन से मोह - भय मिटाने को,
श्री कृष्ण ने था उपदेश दिया,
व्याक्त मानव का उद्देश्य किया।
त्रि गुणों का भेद था समझाया,
आत्मा का रहस्य था बतलाया,
दिया ज्ञान योग के रूपों का,

स्वयं के विभिन्न स्वरूपों का,
भक्ति और कर्म के मार्ग का,
पुरुषार्थ और परमार्थ का।
है अनंत सागर इसमें व्याप्त,
समझने को जीवन है अपर्याप्त,
किन्तु प्रयत्न कहां वर्जित है,
प्रयास से भी सुख अर्जित है।
एक प्रयास हम भी हैं करते,
कर्म योग को हैं समझते।
केशव का था यह विशिष्ट कथन,
सब से प्रिय उनको कर्म योगी जन,
संन्यासी से भी उच्च हैं वो,
तजते अपने कर्तव्य ना जो।
सुख दुख जीवन के सहते हैं,
किन्तु व्याकुल न रहते हैं,
कमल के पतों की भांति,
कीचड़ दूषित नहीं कर पाती,
जंजाल के मध्य रहकर भी,
जिनको माया नहीं बहकाती।
इंद्रजाल में जो ना फसते हैं,
सम भाव सदैव ही रखते हैं,
निष्काम कर्म योगी है कहलाते,
जो संतुलित मन रखते हैं।
फल की इच्छा से मुक्त रहकर,
हर कार्य समर्पित है करते,
प्रभु के श्री चरणों में,
सर्वस्व हैं अर्पित करते।
सांसारिक जीवन की चमक से,
अर्चभित जो नहीं होते,
यश की चेष्टा कर के भी,
जो लोभ ग्रसित नहीं होते।
सम्मान से आसक्त न हों,
अपमान से अशक्त न हों,
शोक, दुख, न अभिमान से,

नहीं डोलते जो गुणगान से।
संतुलन का मूल्य समझते हैं,
अत्यधिक से सदैव ही बचते हैं,
सतगुणों को अपनाते हैं,
कर्तव्यों को सदा निभाते हैं।
सुनकर कौंतेय थे हुए प्रसन्न,
पर शंकाओं में उलझा था मन,
जिज्ञासाओं को शांत करने को,
धनुर् धरी ने प्रश्न किया:
सुनने में लगता है सुंदर,
पर आंचरण में है यह अति जटिल,
संसार में रहकर मुक्त रहे,
मानव मन के लिए है मुश्किल।
निश्चल मुस्कान संग गोविंद ने,
पार्थ को उत्तर ये दिया:
गृहस्थी में भी वैरागी,
वह है एक विशिष्ट त्यागी,
माना कि यह है सरल नहीं,
मन पर नियंत्रण प्रबल नहीं,
किन्तु संकल्प में भी बल है,
प्रयासों से हर मुश्किल हल है।
जो करते हैं अथक प्रयत्न,
पाते है ईश्वर कृपा - रत्न,
जो आता बनके शरणार्थी,
बनता हूं उसका मैं सारथी।
प्रयत्न जो सदैव करे,
वह निराश नहीं हो सकता है,
निष्काम कर्म योगी की तो,
समाज को आवश्यकता है।
श्री वचनों पर श्रद्धा रखकर,
तो हम प्रयास कर सकते हैं,
अभ्यास कर कर्म योग का,
तमस को हर सकते हैं।



लॉकडाउन या जीवन की सीख...



श्याम राव

सामान्य कर्तव्य सहायक

दोस्तों समझ नहीं आता कहाँ से शुरुआत कर और कहाँ से नहीं फिर भी एक पंक्ति जिंदगी एक सफर है से प्रेरित होकर लिखने की एक कोशिश की हैं, आशा करता हूँ कि आप तक पहुँच सकूँ। दोस्तों कभी किसी ने सोचा नहीं होगा कि ऐसे दिन भी आएंगे कि इंसान-इंसान से चाह कर भी मिल नहीं पाएगा, वो इंसान जो पहले यह कहकर कि समय नहीं मिलता हैं किसी से मिल नहीं पाता था, कहीं जा नहीं पाता था। बहुत से लोग तो हमेशा यह सोचने या कहे तो योजना बनाते रहते थे कि हम अभी न मिलकर किसी ओर दिन फलाने परिचित से मिलने जाएँगे या फिर परिवार

के साथ किसी ओर खास अवसर पर मिलने जाएँगे क्योंकि अभी ठीक समय नहीं है या हम बहुत व्यस्त है, ऐसे कितने ही सारे बहाने हमें मिलते थे अपनी या परिवार की इच्छाओं को रोकने के लिए।

परन्तु सच कहें तो इस लॉकडाउन ने हमें ये तो अच्छी तरह से सिखा दिया है कि जो पल आपको मिले हैं वो हर एक पल बेशकीमती हैं इसे हमें व्यर्थ नहीं होने देना चाहिए, जो कुछ भी आप करना चाहते हो उसे शुरु कर देना चाहिए। एक तरफ जहाँ लोगो ने बहुत सी कठिनाईयों का सामना किया है वहीं दूसरी तरफ इसके साथ ही लोगों ने इन कठिनाईयों में अपने आत्म विश्वास, आत्म नियंत्रण, आत्म चिंतन जैसे पहलुओं को ओर भी बढ़ाया है, परखा है कि कैसे इन विषम परिस्थितियों में भी हम सकारात्मक सोच को बनाए रखकर जिंदगी को कैसे जिया जा सकता है, एवं दूसरों को भी उत्साहित कर उनके आत्मविश्वास और आत्म नियंत्रण को बढ़ाने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। सच कहें तो देश का एक बहुत बड़ा वर्ग ऐसा भी है जो इन परिस्थितियों में रह कर समय ओर जीवन में हर वो वस्तु जिसके बारे में वो कभी गंभीर नहीं था अब उसे गंभीरता से लेगा चाहे वो आपसी रिश्ते हो या रोजमर्रा की उपयोगी वस्तुएं हो। दोस्तो जीवन में हर समय आता है और चला जाता है चाहे वो बुरा समय हो या अच्छा पर हमें एक सीख जरूर देकर जाता है, जीवन में सकारात्मकता का होना ही जीवन को आनंदमयी बनाता है और इसी सकारात्मकता की वजह से ही जीवन की उम्मीद की जा सकती हैं। इन परिस्थितियों में हमने जीवन की कई सारी महत्वपूर्ण चीजों के बारे में सीखा है कि सकारात्मकता, कार्यप्रधान, आत्म संतुष्टि, आत्म नियंत्रण और रिश्तों के प्रति समर्पित होकर हम विषम परिस्थितियों में भी अपना जीवन जी सकते हैं और रोजमर्रा की भागदौड़ वाली जिंदगी में भी हम इन महत्वपूर्ण बातों को अपने जीवन में अपना कर अपने जीवन को संतुलित कर सकते हैं और साथ ही हम समाज के प्रति एक अच्छा उदाहरण बनकर संदेश दे सकते हैं।

कितना गिरा हुआ...

हाँ मैंने उठाया था गिरते हुए को,
मंजर तक पहुँचाया था गिरते हुए को।

लाख जतन कर सहारा पार कराया,
खुशनुमा मंजर तक पहुँचाया।

हर पल-हर क्षण यही सोचा,
क्या हुआ गर मैं नहीं पहुँचा।

एक दिन तो भी आएगा,
जब उसे खयाल मेरा भी आएगा।

हर कोई नहीं होता हम जैसा,
चुप रहकर जो सब सह लेता,
पर ना किसी से कुछ कहता।

जिसने सहारा पार कराया,
गिरते हुए को उठाया,
उसे ही तुमने गिरा बताया।

दुख होता है यह जानकर,
खुद को गिरा हुआ जानकर।

क्या होता गर तुम कह देते,
चलो उस मंजर पर हम साथ चलते,
चलो उस मंजर पर हम साथ रहते।



शहीद उय्यालवाडा नरसिम्हा रेड्डी



रीतेंद्र सिंह
अकादमिक सहयोगी

वो दौर था जब अंग्रेजों ने अपने षडयंत्र से भारत पर हक जताना शुरू कर दिया। जब-जब अन्याय पनपता है तब-तब कुछ महापुरुष जन्म लेते हैं और अन्याय को खत्म करते हैं। ऐसे ही भारत ने अंग्रेजों से आजादी पाने के क्या नहीं किया। आजादी के लिए देश के लाखों वीर सपूत शहीद हो गये। फिर भी उनके इरादे बुलंद थे। अंग्रेजों के बढ़ते हुए अत्याचारों से पूरा देश दुखी था। फिरंगी अफसर जगह-जगह जाकर लोगों से उनकी उपजाऊ जमीन छीन लेते थे और उसके उनसे बंजर भूमि में काम करवाते और उससे भी अधिक कर वसूला करते थे। ऐसा न करने पर मासूम लोगों को प्रताड़ित करते और कई दफा उनको मार देते थे। उनके बढ़ते अत्याचारों से भारत-भूमि के देशवासी दुखी थे। फिरंगियों के इस तरह के आतंक से जन-जीवन अस्त-व्यस्त हो गया। लोगों की भूख के कारण मृत्यु होने लगी। देश में लगभग सभी जगह अंग्रेज अपनी हुकूमत करने लगे। परन्तु देश के कुछ हिस्सों में वो अपनी हुकूमत चलाने में नाकाम रहे।

24 नवंबर 1806 को आंध्रप्रदेश के कुर्नूल जिले के रूपनगुडी गांव में उय्यालवाडा नरसिम्हा रेड्डी नाम एक महापुरुष ने शितम्मा और मललारेड्डी के पुत्र के रूप में जन्म लिया। बचपन से ही उनकी वीरता के चर्चे थे। उनकी समाज सेवा में रुचि थी। वो एक योगी भी थे कभी समय तक भगवान

जगरनाथ का ध्यान किया करते थे उसके कारण वो अपना ध्यान भक्ति जल में किया करते थे। निरंतर अभ्यास से वो अपनी सांस को रोक सकते थे। नरसिम्हा रेड्डी ने वर्ष 1847 में किसानों पर हो रहे अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठाई थी और अंग्रेजों से लोहा लिया। नरसिम्हा को अल्लागुडा क्षेत्र में अपने दादा से कर वसूलने की जिम्मेदारी मिली। किसानों पर अंग्रेजों के जुल्म बढ़ते जा रहे थे। नरसिम्हा ने इसका विरोध किया। मद्रास प्रेसीडेन्सी जो आज के समय में आंध्रप्रदेश का हिस्सा है, वहां अंग्रेजों ने रैयतवाड़ी व्यवस्था शुरू की। इस व्यवस्था से अंग्रेजों को कर के रूप में काफी धन मिलता था। फिरंगी अफसर मुनरो ने 1820 में इसे पूरे मद्रास में लागू कर दिया। इस व्यवस्था के तहत अंग्रेजों और किसानों के बीच एक समझौता हुआ। इसमें किसान को कर सीधा ब्रिटिश कंपनी को देना होता था। लेकिन अगर कोई किसान कर नहीं चुका पाता तो उसकी जमीन छीन ली जाती थी। नरसिम्हा ने इस व्यवस्था के खिलाफ आवाज उठाई।

रैयत वाड़ी व्यवस्था से दुखी होकर किसान आत्महत्या करने लगे। लेकिन इसके खिलाफ आवाज उठाने की हिम्मत किसी की नहीं हुई थी। नरसिम्हा से किसानों की ये दशा देखी नहीं गयी। उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ किसानों को एकजुट करने शुरू किया और किसानों को उनका हक दिलाने के लिए नरसिम्हा ने अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया।

5 हजार किसानों को साथ लेकर नरसिम्हा ने अंग्रेजी के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया। वे अंग्रेजों के खजानों को लूटने लगे और उसको गरीबों में बाँटने लगे। नरसिम्हा की बढ़ती लोकप्रियता को देख अंग्रेज परेशान हो गए थे। ऐसे में उन्होंने नरसिम्हा को खत्म करने की ठान ली। अंग्रेजों और नरसिम्हा में कई दफा युद्ध हुआ हर बार अंग्रेजों को हार का मुंह देखना पड़ा। फिर अंग्रेजों ने छल कपट से षडयंत्र रचा। अंग्रेजों ने नरसिम्हा की टोली के लगभग 1000 लोगों के खिलाफ गिरफ्तारी का वारंट निकाला। इनमें 112 लोगो को मौत की सजा सुनाई गई जिसमें नरसिम्हा का नाम भी शामिल था। ब्रिटिश अधिकारियों को उनके कोइलकुन्तला के ठिकाने की जानकारी मिली जिसके बाद ब्रिटिश अधिकारियों ने रातों-रात वह क्षेत्र घेर लिया। 6 अक्टूबर 1846 को आधी रात के समय उनको बंदी बना लिया गया। फिर उनको बुरी तरह प्रताड़ित किया और जंजीरों में बांध दिया गया। उनको कोइलकुन्तला की सड़कों पर खून से सने हुए कपड़े में ले जाया गया ताकि अन्य कोई व्यक्ति ब्रिटिश के खिलाफ विद्रोह करने की हिम्मत न करे।

22 फरवरी 1847 को लोगो में भय पैदा करने के लिए और राजद्रोही का आरोप लगाते हुए अंग्रेजों ने नरसिम्हा को सरेआम फांसी दे दी। कुछ लोगों को अंडमान दीप समूह की जेल में भेजा दिया गया। इनके बारे में कम ही लोग जानते हैं। नरसिम्हा रेड्डी पहले देशभक्त थे, जिन्होंने शक्तिशाली ब्रिटिश शासन के खिलाफ विद्रोह किया था।

नरसिम्हा रेड्डी तो शहीद हो गए लेकिन वे लोगों के मन में क्रांति की ज्वाला जगा गए।



सार्थक खोडे
सुपुत्र पंकज खोडे, आईटी विभाग

कोरोना वायरस

अरे भाई! कोरोना वायरस
कब होगा तू टस से मस,
ऐ ! कोरोना
तूने सबको दिला दिया रोना,

चीन, इटली और अमेरिका में मचा दिया कोहराम
अब लोग कह रहे हैं राम-राम,
मेडिकल स्टाफ है महान
बचाई बहुत लोगो की जान,

बस, विमान एवं रेल सेवाएँ हुई ठप
लोग घर से बाहर निकलकर कर रहे गपशप,
अरे भाई ! अब तो कोरोना से डरो
और कुछ दिनो तक तो घर पर रहो,

मानिये प्रधानमंत्री जी की बात
वरना मिल जाएगा कोरोना का प्रसाद,
हमेशा रखिये मास्क और सेनेटाईज़र अपने साथ
न मिलाये किसी से अपना हाथ,

अगर कोरोना ने लिया भयावह रूप
तो शायद ही बचेगा भारत का सुंदर स्वरूप,
आपको मिलेगी सभी आवश्यक चीज़े
पर घर से बाहर न निकले क्योंकि आप देख रहे हैं नतीजे।



हर्षित लाहोटी
आईपीएम 2016

हिंदी दिवस

14 सितंबर को जब हिंदी दिवस मनाया जाता है।

हिंदी हमारी मातृभाषा है,

सबको पुनः याद आ जाता है।

जाने क्यों आज भी जो हिंदी भाषी होते हैं।

अंग्रेज़ी भाषी उनको थोड़ा पिछड़ा ही समझते हैं।

लेकिन हिंदी में जो मधुरता है।

छंद अलंकार की जो सुन्दरता है।

कहीं वो और नहीं पाई जाती है,

फिर क्यों हिंदी पीछे रह जाती है?

यह छोटे बड़ों का फर्क बताती।

यह आप और तुम का ज्ञान कराती।

इसमें बोली का जो अपनापन है।

इससे जुड़ता अंतर्मन है।

आज वादा सबको करना होगा,

हिंदी भाषा को और व्यवहार में लाएंगे।

जब हिंदी होगी जीवन का अभिन्न हिस्सा,

तभी सही अर्थ में हिंदी दिवस मनाएंगे।



डॉ. अनन्या मिश्रा
संचार एजीक्यूटिव

कविता : मैं....

मैं जन्म, मैं जीवन और मृत्यु भी मैं
मैं बच्चा, मैं माँ, हर रिश्ता ही मैं
मैं बचपन, मैं जवानी, बुढ़ापा भी मैं
मैं लक्ष्मी, मैं सरस्वती और दुर्गा भी मैं

मैं सवेरा, मैं निशा और साँझ भी मैं
मैं फूलों की खुशबू और शोरूकी भी मैं
मैं नीम, मैं शहद और तुलसी भी मैं
मैं शोला, मैं शबनम और आँधी भी मैं

मैं निबल, मैं सबल और अटल भी मैं
मैं माटी, मैं जल और आकाश भी मैं
मैं सूरज, मैं चंद्रा और तारा भी मैं
मैं आरती, मैं अज्ञान, अरदास भी मैं

मैं वर्षा की बिजली, सर्द रातें भी मैं
मैं वसंत, मैं पतझड़, गर्म लपटें भी मैं
मैं गम, मैं खुशी और गुस्सा भी मैं
मैं चिंता, मैं सुकून और नादानी भी मैं

मैं ग्रंथ, मैं साहित्य और पुराण भी मैं
मैं गद्य, मैं किस्सा और कहानी भी मैं
मैं सुर, मैं ताल और सरगम भी मैं
मैं नृत्य, मैं नाटक, हर कला भी मैं

मैं ज़िद, मैं जुनून और जज़्बात भी मैं
मैं इश्क, मैं नफ़रत, हर भाव ही मैं
मैं में भी, मैं तू भी, और सब कुछ ही मैं
मैं लड़की, मैं औरत, और नारी भी मैं।



कहानी...



राहुल बधेल
आईपीएम छात्र

कहानी की शुरुआत मैं बारिश के मौसम से करना चाहूंगा ऐसा मौसम जिसमें बेरंग बूंदें सारे वातावरण को विभिन्न रंगों में रंग देती है।

प्रकृति जैसे हरी चादर ओढ़े हुए रहती है मन में विचार आया क्यों ना ऐसी बारिश में मोटरसाइकिल से घूमने का मजा लिया जाए।

अपने छोटे भाई के साथ मैं निकल पड़ा जितने भी काम थे सभी पूरे हुए मन में आत्मविश्वास लेकर हम घर लौट रहे थे कि अचानक सुनसान सड़क और जंगल में एक मोटरसाइकिल में 2 लोग सवार होकर हमारे सामने आकर चिल्लाने लगे।

मन में भय आया लगा कि भाई आज तो जेब में से 30000 बैंक से निकाल कर लाए हुए रखे थे वे गए। जिसने डर को और भी पुख्ता कर दिया।

छोटे भाई ने कहा कि वापस चलें, किंतु इतना समय ही कहा था वे दोनों मोटरसाइकिल से उतरे और हमारी तरफ लपके मैंने भी थोड़ी हिम्मत दिखाई मोटरसाइकिल साइड में लगा कर खड़ा हो गया, पूछा क्या बात है तभी जोर से आवाज आई क्यों अभी इसी गांव की तरफ से आ रहे हो ?

शाम ढल चुकी थी और घनघोर अंधेरा।

तभी हम ने जवाब दिया हां भाई हम तो अभी उसी गांव से आ रहे हैं।

क्यों तुम ही अभी उसे ठोक कर आ रहे हो ?

तुम्हें पता है उसकी मृत्यु हो गई है। मेरे तो दिमाग में कुछ समझ में नहीं आया मैंने कहा नहीं भाई हम तो सीधे चले आ रहे हैं किसी भी तरीके से किसी को भी हमने नहीं टक्कर मारी है।

तभी उनमें से एक युवा अचानक फूट कर रोया और कहा नहीं नहीं वह तुम ही हो तुम ही ने यह हेलमेट पहना हुआ था मैंने खुद देखा है उस ने जोरदार टक्कर मारकर उसे मौत के आगोश में सुला दिया।

मेरे होश का ठिकाना ना रहा। हाय! यह क्या कह रहा है जितने भी भगवान थे तुरंत सभी की कसम खा ली मैंने! कि नहीं भाई मैंने नहीं किया। यह आरोप तुम झूठा लगा रहे हो। नहीं-नहीं तुम रुको मैं अभी सबको बुलाता हूं अचानक उसके एक फोन पर एक सनसनाती हुई बोलेरो और उसमें से लगभग 8 घंटे नौजवान उतरा, सच बताओ।

मेरी तो सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। किंतु 'जब कर नहीं तो डर नहीं' उनमें से एक हट्टा-कट्टा आदमी निकल कर बोला क्यों तुम ही थे ना जो भी टक्कर मार कर आए हो मैंने कहा नहीं भाई मैं तो नहीं था।

नहीं! इस लड़के ने देखा है। मैंने फिर उन्हें समझाने की कोशिश की नहीं भाई यह हमने नहीं किया तभी उन्होंने कहा तुम्हारे पास क्या सबूत है कि तुमने नहीं किया।

एक पल तो मुझे लगा कि यह लोग मुझे लूटने वाले हैं, फिर भी मैंने हिम्मत करके कहा कि जब मैं उस सड़क से आया था और तभी मैंने एक आदमी को बीच रोड में खड़े हुए देखा मैं समझ नहीं पा रहा था यह बीच में क्यों खड़ा है।



मैंने अपनी गाड़ी साइड से निकाली तभी देखा एक व्यक्ति एक छोटे से पिल्ले को बीच सड़क में आने वाली गाड़ियों से बचा रहा है मैंने सोचा कि बीमार होगा।

पर मुझे क्या पता था कि वह कुत्ता-कुत्ता नहीं इनके जिगर का टुकड़ा था। कितनी मानवता है इंसान में यह उस का जीता जागता उदाहरण था कि पूरे गांव के लगभग 10 लोग हमारे सामने उस कुत्ते को मारने वाले इंसान को पकड़ने के लिए खड़े थे।

मेरे समझाने पर और उन्हें बताने पर कि भाई मैं बिजली विभाग में इंजीनियर हूँ और मैंने आपके उस कुत्ते का एक्सीडेंट नहीं किया।

इससे पहले कि वह बड़ा व्यक्ति मेरी बात माने कि अचानक नौजवान युवा जोर से रोता हुआ बोला – यही थे। मन में क्रोध आया किंतु मैंने अपने क्रोध पर काबू किया और उस भाई को प्यार से समझाया कि नहीं भाई तुमने किसी और को देखा होगा मुझ से यह गलती नहीं हुई। तभी उसने रोते हुए कहा भैया यह मेरे जिगर का टुकड़ा था हमारे घर में पांच छोटे छोटे बच्चे हैं जो छोटे से पिल्ले के साथ खेलते थे।

आज एक भी व्यक्ति रात में खाना खाने वाला नहीं सभी घर में फूट-फूट कर रो रहे हैं।

कलयुग में जहां लोग इंसान को रोड पर मरता हुआ छोड़ देते हैं उसकी फोटो खींच लेते हैं किंतु उसे अस्पताल नहीं पहुंचाते।

वहां एक कुत्ते के लिए कितने लोग यहां इकट्ठे हुए मेरा दिल गदगद हो गया।

मेरे दिल से बस यही निकला कि मैंने जिंदगी में पहली बार ऐसे लोग देखेंगे जो लगभग 10 किलोमीटर आगे आकर उस पिल्ले की मौत के जिम्मेदार लोगों को पकड़ने के लिए प्रयासरत हैं।

बड़ी मुश्किल से उन्हें समझा-बुझाकर मैं रवाना हुआ।

मन में एक दुखद और सुखद दोनों अनुभव लेकर घर की ओर निकला।

दुखद इसलिए एक बेजुबान की मृत्यु हो गई थी और सुखद इसलिए कि आज भी इंसान में इंसानियत जिंदा है।





भाषा और संप्रेषण – व्यावसायिक परिपेक्ष्य में



श्रीमती गिरिजा कुमार

संदेशों को भेजना तथा प्राप्तकर्ता द्वारा उन्हें सही अर्थों में समझना ही संप्रेषण कहलाता है। संप्रेषण, सम + प्रेषण से मिलकर बना है। सम = भली प्रकार व प्रेषण = भेजना। इसे हम एक चक्र के द्वारा भी समझ सकते हैं।

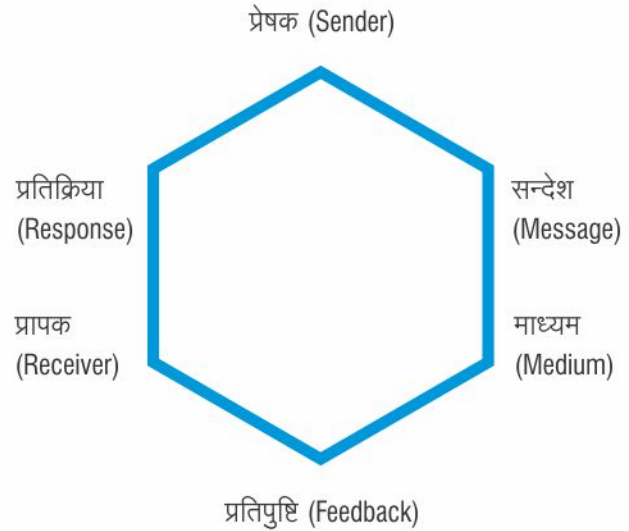


इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्रेषक किसी भी रूप में अपनी बात प्राप्तकर्ता तक पहुँचाता है और बदले में अपना प्रतिउत्तर प्रेषक तक पहुँचाता है। इस चक्र के पूरा होने पर ही संप्रेषण पूर्ण कहलाता है। यदि यह चक्र पूर्ण न हो तो संप्रेषण प्रभावी नहीं कहला सकता है।

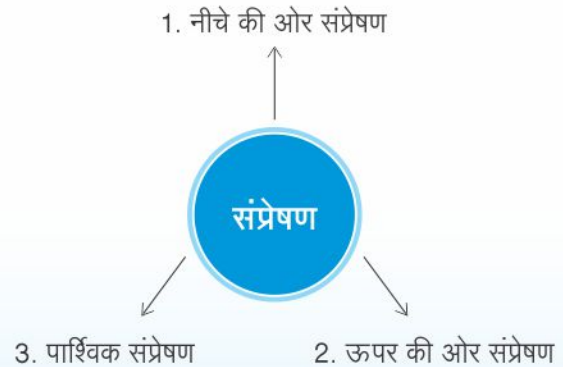
प्राचीन काल से ही भाषा ने मनुष्य को जोड़ कर रखा है। भाषा का प्रभाव तभी पड़ता है जब उसका संप्रेषण में सटीक उपयोग किया गया हो। संप्रेषण सामान्यतः संदेशों एवम् विचारों के आदान प्रदान को कहा जाता है। एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति को सूचनाओं और

व्यावसायिक परिप्रेक्ष्य में भाषा और संप्रेषण का सर्वमान्य है। इस क्षेत्र में प्रभावी संप्रेषण द्वारा ही नियोजन, संगठन, कार्य निर्णय लेना, समन्वय करना नेतृत्व करना तथा व्यक्तिगत व संस्थागत उन्नति संभव हो सकती है। संप्रेषण जीवन कि एक क्रिया है जिसके अभाव में जीवन कि कल्पना नहीं कि जा सकती है।

व्यावसायिक परिदृश्य में संप्रेषण के कई घटक हो सकते हैं।



संप्रेषण के कई उद्देश्य होते हैं परन्तु वह तब तक प्रभावी नहीं ही सकता जब तक उसमें एकरूपता, स्पष्टता, सहजता, सम्पूर्णता, शिष्टता एवं मौलिकता न हो। व्यावसायिक क्षेत्र में संप्रेषण को तीन प्रकारों में विभक्त किया जा सकता है।





1. नीचे की ओर संप्रेषण- इस प्रकार के संप्रेषण में वरिष्ठ अधिकारी द्वारा अधीनस्थ अथवा कनिष्ठ अधिकारी को संदेश भेजा जाता है। यह संदेश किसी आदेश, सूचना, परिपत्र, कंपनी की नीतियों या निर्देशों के रूप में हो सकता है।

इस प्रकार के संप्रेषण के कई लाभ होते हैं यह एक सुदृढ़ कार्यप्रणाली बनाने के काम आता है इसके माध्यम से कार्यों का सफल निष्पादन किया जा सकता है कार्यस्थल पर अनुशासन बनाए रखने में मदद करता है समय-समय पर किए गए उक्त संप्रेषण कर्मचारियों के मनोबल को उन्नत करते हैं।

इस संप्रेषण में कुछ हानिकारक घटक भी हो सकते हैं जैसे यह लिखित होता है अतः भावाभिव्यक्ति का अभाव पाया जाता है यह कर्मियों में उच्चतम व निम्नतम होने का भाव जगाता है यहा प्राप्तकर्ता तथ्यों की व्यक्तिगत अथवा गलत व्याख्या भी कर सकता है यदि मौखिक संप्रेषण हुआ है तो इसका रूप विकृत होने की भी संभावना हो सकती है यदि एक या अधिक मध्यस्थ इससे जुड़े हों परंतु व्यावसायिक स्तर पर इस संप्रेषण का बहुत महत्व होता है।

2. ऊपर की ओर संप्रेषण इस प्रकार के संप्रेषण में संदेशों का उद्गम अधीनस्थ कर्मचारी से होकर वरिष्ठ तक जाता है यह किसी रिपोर्ट स्पष्टीकरण आवेदन सुझाव अवकाश पत्र इत्यादि के रूप में हो सकता है।

इस संप्रेषण का भी अपना महत्व होता है इससे समुचित सूचनाएं प्राप्त होती हैं जिनका प्रयोग कार्य नियोजन में किया जा सकता है व्यावसायिक स्थल पर इस प्रकार का संप्रेषण एक स्वस्थ वातावरण बनाता है इस प्रकार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता देने से व्यक्ति संस्थान के प्रति निष्ठावान बने रहते हैं उन्हें अपने महत्वपूर्ण होने का भान होता है परंतु यहाँ भी कई अधिकारी इसे पसंद नहीं करते एक प्रकार की नकारात्मक मनोवृत्ति का विकास होता है।

3. संप्रेषण का तीसरा प्रकार है पार्श्विक संप्रेषण: जब संप्रेषण एक ही स्तर के कर्मचारियों के बीच हो तो उसे पार्श्विक संप्रेषण कहते हैं।

इसमें एक ही स्तर के अधिकारी या कर्मचारी संप्रेषण करते हैं यह लिखित या मौखिक रूप में हो सकता है इसके कई लाभ हैं आपसी बातचीत से कई समस्याओं को हल किया जा सकता है इससे आपसी समन्वय एवं सामंजस्य बढ़ जाती है इसमें समानता का भाव होता है कोई छोटा या बड़ा नहीं होता है कार्यालय का वातावरण अच्छा बनता है।

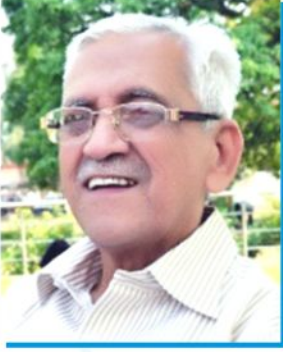
परंतु इस प्रकार के संप्रेषण की कुछ हानियाँ भी होती हैं जैसे कि कर्मचारियों में आंतरिक समूह बनने लगते हैं जो कि गुटबाजी हो सकती है इससे लोग गपशप में समय व्यर्थ गँवाते हैं यहाँ पर अधिकारियों का नियंत्रण कमजोर होने का भी डर होता है।

व्यावसायिक परिप्रेक्ष्य में हम देखते हैं कि तीनों ही प्रकार अपनी उपयोगिताएं हैं समय व परिस्थिति अनुसार सभी प्रासंगिक हैं केवल आवश्यकता है सही उद्देश्य व सही समय का प्रभावी संप्रेषण ही व्यक्तिगत व व्यावसायिक उन्नति का महत्वपूर्ण साधन है। इस प्रकार लाभ-हानि के विश्लेषण हम इसका प्रभावी उपयोग करते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।





कोरोना



श्री बी. कोडवानी
पूर्व प्रबंधक बीएचईएल

इस सृष्टि ने सृष्टि की रचना की। असंख्य जीव अजीवों का निर्माण किया। सुंदर-सुंदर झील झरनों की रचना की हरे भरे लहलहाते वनों के साथ ऊंचे-ऊंचे पर्वत श्रृंखलाओं का निर्माण किया। कल-कल करती नदियां बहाई। असंख्य ग्रह नक्षत्रों के साथ-साथ चमकते, दहकते सूर्य और शीतल चांद्र का निर्माण किया। जल-थल के साथ-साथ बनाए इस पृथ्वी पर असंख्य छोटे-छोटे कीट, पतंगे, पक्षियों के साथ विशालकाय जीव भी। इन सबके साथ उस निर्माता ने निर्माण किया अपना श्रेष्ठतम जीव 'मनुष्य' का भी। मनुष्य को उस निर्माता ने दिया अन्य जीवों से उन्नत बुद्धि के साथ विकसित मन और साथ में दिया विवेक भी। अपने इसी विकसित मन और बुद्धि के बल पर उसने विजय पाई पृथ्वी के समस्त विशालकाय सागर और ऊंचे-ऊंचे पर्वतों पर। उसने विजय पाई बलशाली पशुओं पर। अपनी बुद्धि के बल पर उसने सब को अपने नियंत्रण में रखा है। नियंत्रण में रखा है समस्त जीवों के साथ अजीवों को भी।

मनुष्य के तीन पक्ष हैं भौतिक, मानसिक और आध्यात्मिक। आज वह अपने मानसिक पक्ष की सहायता से अपने भौतिक पक्ष को जरूर कुछ सुदृढ़ कर पाया है। यह उसके भौतिक पक्ष की सुदृढ़ता के कारण ही है, कि वह, न केवल अपने से विकसित जीवों को अपने नियंत्रण में रख पाया, बल्कि समस्त प्राकृतिक ससाधनों को भी अपने क्षणिक लाभ हेतु उनका अत्याधिक दोहन कर, अपनी तथा कथित संपन्नता हासिल की है। इसी का परिणाम निकला है, प्राकृतिक स्थलों का अत्याधिक क्षरण होना या विलुप्त होते जाना। इसी का परिणाम है, प्रकृति कभी कभी अपना विकराल रूप दिखाती है। कहीं अति वृष्टि या कहीं अनावृष्टि कहीं सूखा तो कहीं कहीं बाढ़। सदा शिव की गंगा और श्रीकृष्ण की यमुना आज गंदे नाले का रूप ले चुकी हैं। जल के साथ वायु भी हमारे द्वारा प्रदूषित की गई है। देश की राजधानी दिल्ली आज विश्व के सर्वाधिक प्रदूषित शहरों में से एक है। खेतों में अत्याधिक रसायनिक खाद और कीटनाशकों के लगातार खेतों में डालने के कारण वहाँ उत्पन्न होने वाले अनाज, फल सब्जी आदि भी अपना मूल स्वाद और गुण दोनों खो चुके हैं। इन्हीं सब कारण से लोग आज जघन्य रोगों से पीड़ित हैं। देश के समस्त डॉक्टर एवं अस्पताल आज रोगियों से घिरे हुए हैं। क्षणिक लाभ की लालसा से आज मनुष्य पतन की राह पर है। अपने इस भौतिक लाभ की लालच में आज वह अपना आध्यात्मिक पतन तो कर ही रहा है, साथ में वह अपने मानसिक पक्ष को भी कमजोर कर रहा है। निश्चित ही मनुष्य आज इस सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ जीव है। आज वह अपने विकास की अंतिम पायदान पर है मनुष्य जन्म लेने के पूर्व उसे विकास की सीढ़ी के कई पायदानों से होकर गुजरना पड़ता है। स्थूलतम से मनुष्य जन्म लेने के पूर्व उसे कई पशु योनियों से होकर गुजरना पड़ता है। यही कारण है कि मनुष्य के पास वह सभी पास विकृतियां तो है ही साथ में उसे सृष्टि ने विकसित मन के साथ उन्नत बुद्धि और विवेक भी दिया है। अपने इसी विवेक के बल पर वह मनुष्य कहलाने का अधिकारी है। यह विवेक ही उसे उसकी श्रेष्ठता की पहचान दिलाता है। अच्छे विवेकशील व्यक्ति ही अच्छे व्यक्तियों की श्रेणी में आते हैं। जो व्यक्ति जितना अधिक विवेकशील होगा वह उतना ही अच्छा एवं सम्माननीय कहलाएगा। विवेक के अभाव में लोग उस व्यक्ति की तुलना पशु से करते हैं। छोटी-छोटी बात में लोग उसे कहते हैं - आदमी है या जानवर। आज पूरे विश्व में समाज का एक बड़ा वर्ग विशेषकर भारत के बाहर मांसाहारी है। कुछ वर्ष पूर्व तक विश्व के बड़े-बड़े देशों में शाकाहारी भोजन मिलना बड़ा मुश्किल था। आजकल कहीं-कहीं किसी जगह होटल में मिल जाता है। चाइना में कोरोना के पूर्व तक शाकाहारी भोजन ढूंढना असंभव था। आज जरूर प्रकृति की मार से पूरा चाइना शाकाहारी बना हुआ है। पूरे विश्व में भारत में ही समाज का एक बड़ा वर्ग शुरू से ही शाकाहारी है। मुगलों और अंग्रेजों की गुलामी से जरूर समाज का एक बड़ा वर्ग मांसाहारी हो गया है। देश की लंबी गुलामी से हमारी महान संस्कृति और भव्य दर्शन पर, जरूर धूल की मोटी परत चढ़ गई है। आजादी के बाद देश के समूचे नेतृत्व में चाहे वह धार्मिक, राजनैतिक या सामाजिक क्षेत्र का क्यों न हो, किसी ने भी लोगों के खान-पान पर विशेष ध्यान नहीं दिया। सबने इसको व्यक्तिगत मामला मानकर इस पर कोई विशेष ध्यान दिया ही नहीं।



अपना पेट भरने के लिए केवल मांसाहार का उपयोग करना एक पाशविक प्रवृत्ति है। इस धरा पर मनुष्य अन्य सब जीवों से उन्नत जीव है इसीलिए ही उसे 'परमात्मा' की निर्माण शाला का बेस्ट प्रोडक्ट-सर्वोत्तम उत्पाद कहा गया है। इस सर्वोत्तम जीव के भोजन के साथ-साथ उसका पूरा चिंतन और उसकी संपूर्ण चाहत भी श्रेष्ठ ही होनी चाहिए। उत्तम चिंतन के लिए सर्वश्रेष्ठ भोजन के साथ-साथ श्रेष्ठ संगत भी अनिवार्य है। यदि भोजन श्रेष्ठ है पर परवरिश तथा संगत-मेल-जोल में सात्विकता का अभाव है तो निश्चित ही उसके चिंतन में सात्विकता और श्रेष्ठता का भी अभाव ही रहेगा। आज जो विश्व में जगह-जगह मारपीट लड़ाई, झगड़े और असंतोष फैला हुआ है, उसके पीछे जनसाधारण, जो नित्य अपना आहार ले रहा वह भी एक प्रमुख कारणों में से एक है। लड़ाई झगड़ों के साथ आज समाज में लोगों के मध्य अनैतिकता भी चारों तरफ फैली हुई है। समाज में जनसाधारण के मध्य नैतिकता का अभाव है। इस अनैतिकता के पीछे भी मनुष्य द्वारा किया जा रहा आहार का भी महत्वपूर्ण रोल है।

मनुष्य अपने जीवन में तीन क्षेत्रों/पक्षों से जुड़ा हुआ है। भौतिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक। उसके तीन पक्ष और भी हैं सात्विक, राजसिक और तामसिक। मनुष्यों द्वारा किये जा रहे समस्त खाद्य पदार्थों/आहार को हम सात्विक, राजसिक एवं तामसिक इन तीन श्रेणियों में बांट सकते हैं। सात्विक भोजन मनुष्य के उनके साथ मन को भी स्वस्थ रखता है। राजसिक भोजन जैसे हलवा पूरी पकवान आदि का कभी-कभी सेवन किया जा सकता है। इससे मनुष्य के भौतिक पक्ष में जरूर कुछ लाभ होता है लेकिन इससे उसके मानसिक और आध्यात्मिक पक्ष में न तो कोई लाभ होता है नहीं कोई हानि। तामसिक भोजन जैसे बासी भोजन, मांसाहार, चटक-मटक और तेज मसाले आदि के सेवन से हमारे मानसिक और आध्यात्मिक पक्ष को हानि पहुंचती है। इसके साथ ही आध्यात्मिक पक्ष को भी कोई लाभ नहीं इसीलिए तामसिक भोजन को त्यागना ही हितकर है। हमें सदा स्वस्थ भोजन को ही प्राथमिकता देनी चाहिए। कभी-कभी राजसिक आहार ग्रहण कर सकते हैं। राजसिक आहार की अधिकता पर अंकुश लगाना ही होगा तथा तामसिक भोजन का त्याग सबके लिए हितकारी है।

आध्यात्मिक साधक को हमेशा ही सात्विक भोजन ग्रहण करने की सलाह दी जाती है। लगातार तामसिक भोजन विशेषकर मांसाहार तो पूर्ण तरह हानिकारक है। यह मनुष्य के मानसिक और आध्यात्मिक पक्ष को हानि पहुंचाता है। लगातार तामसिक भोजन के सेवन से उच्च मानवीय गुणों का हनन होता है। इससे मनुष्य के सूक्ष्म चिंतन पर भी भारी प्रभाव पड़ता है। तामसिक चिंतन से सूक्ष्म चिंतन और आध्यात्मिक साधना में बाधाएं आती हैं। मन को एकाग्र करने में कठिनाई होती है। पाशविक वृत्तियां प्रबल हो जाती हैं। आज जो समाज में चारों तरफ अराजकता है, मानसिक अशांति है, लड़ाई, झगड़े, चोरी, डकैती, मारकाट मची हुई है, उसके पीछे हो सकते हैं बहुत से कारण। उन सब कारणों के पीछे हमारा तामसिक चिंतन ही प्रमुख है। अकेले तामसिक भोजन के त्यागने मात्र से ही इन सब विपत्तियों पर काफी प्रभाव पड़ेगा। अपराधों में कमी आएगी। इन सब पर पूरी विजय पाने के लिए, सात्विक भोजन को प्राथमिकता देनी ही होगी। सात्विक भोजन के साथ-साथ मनुष्य के मानसिक और आध्यात्मिक पक्ष को पुष्ट करने के लिए, आध्यात्मिक साधना भी करनी ही होगी। इसी में हम सभी का हित समाया है। इसी से सब का कल्याण होगा। केवल और केवल यही कल्याण का पथ है।

पूरे विश्व में जन कल्याण हेतु महा योगेश्वर, महान दार्शनिक एवं पथ प्रदर्शक श्री श्री प्रभात रंजन सरकार ने न केवल एक संपूर्ण जीवन दर्शन आनंद मार्ग की रचना की है, बल्कि साथ में दी तंत्र आधारित वैज्ञानिक आधार लिए अध्यात्मिक साधना पद्धति भी दी है। इस योग साधना को पूरे विश्व में जन जन तक पहुंचाने के लिए हजारों आचार्यों को दक्ष किया गया है। इसमें कई पूर्ण कालिक हैं, जो सन्यासी के रूप में पूरे विश्व में भ्रमण कर रहे हैं, और जन-जन को बिना किसी भेदभाव के निःशुल्क साधना सिखा रहे हैं। इस साधना के साथ आचार्य अच्छे स्वास्थ्य एवं निरोगी रहने के लिए, उन्हें योग आसन आदि भी सिखा रहे हैं। साथ में उन्हें हमेशा सात्विक भोजन लेने हेतु प्रेरित करते हैं। सात्विक भोजन हेतु मांसाहार को तो पूर्ण रूप से त्याग करना ही पड़ता है। मांसाहार से न केवल विभिन्न रोग उत्पन्न होते हैं, साथ में उपजते हैं मन में तामसिक विचार भी। यही तामसिक विचार न केवल मानवीय गुणों का हनन करते हैं बल्कि पाशविक चिंतन और पाशविक गुणों को भी प्रोत्साहित करते हैं। इन्हीं तामसिक प्रवृत्ति के कारण ही आज जगह-जगह क्लेश और कलह चल रही है। सब जगह अशांति का माहौल बना हुआ है।



केवल मांसाहार ही तामसिकता की जननी नहीं है। इस तरह सब जगह फैली हुई तामसिक का एक अन्य कारण गरीबी भी है। आज पूरे विश्व में लगभग 100 करोड़ लोग रोज रात को भूखे ही सोने को मजबूर हैं। भारत में इन लोगों की संख्या 20 करोड़ के आसपास है। यह भूखे गरीब अपनी क्षुधापूर्ति के लिए लोगों का बचा हुआ और बासी खाद्य पदार्थ मजबूरीवश खाते हैं। बासी, रखा हुआ और सड़ा हुआ खाद्य पदार्थ तामसिक तो होता ही है, साथ में कई रोगों की जननी भी है। मानव समाज को रोग मुक्त रखने के लिए सात्विक और ताजे भोजन को प्रोत्साहित तो करना ही होगा। साथ में गरीबी उन्मूलन की तरफ भी ध्यान देना ही होगा। पूरे मानव समाज में सब लोगों की समस्त मूलभूत जरूरतों की पूर्ति हो, समाज में कहीं कोई भूखा न रहे इसकी पूरी व्यवस्था हो। पूरे मानव समाज में इस तरह की व्यवस्था हो जहां कोई भूखा न रहे। सभी स्वस्थ और निरोग रहे। पूरे मानव समाज में सब लोगों की समस्त मूलभूत जरूरतों की पूर्ति हो। इसके लिए महा योगेश्वर श्री श्री प्रभात रंजन सरकार' के संपूर्ण जीवन दर्शन आनंद मार्ग का एक भाग है प्रउत-प्र- प्रगतिशील, उ-उपयोगी, त-तत्व। प्रउत के व्यवहार में आने से मानव समाज में प्रत्येक व्यक्ति को उसकी योग्यता शिक्षा, एवं सामर्थ्य के अनुरूप काम मिलेगा। समाज में कहीं कोई भूखा नहीं रहेगा पूरी शिक्षा व्यवस्था में अमूल चूल परिवर्तन होगा। नव्य मानवतावादी शिक्षा के अनुरूप सबको शिक्षा दी जाएगी। नैतिकता का विकास होगा। सब के स्वास्थ्य पर पूरा पूरा ध्यान दिया जाएगा। लोग हमेशा सात्विक भोजन ही ग्रहण करेंगे। यौगिक आसनों के साथ-साथ सभी नियमित रूप से आध्यात्मिक साधना करेंगे। आनंद मार्ग प्रचारक संघ के आचार्यों द्वारा दी जा रही साधना पूर्ण रूप से तंत्र आधारित है और यह पूरा वैज्ञानिक आधार लिए हुए हैं। सात्विक भोजन, योग आसन और यह साधना नियमित करने से निश्चित ही कोरोनावायरस के साथ अन्य लोगों पर पूरा नियंत्रण किया जा सकता है। विश्व के समस्त युवाओं को प्रउत के साथ साथ आनंद मार्ग संपूर्ण जीवन दर्शन के आधार पर सामाजिक व्यवस्था बनाने में जुटना ही होगा।

इसके साथ सब लोगों को 'आनंद मार्ग प्रचारक संघ' की वैज्ञानिक आधार लिए तंत्र साधना सुलभ हो, ऐसी भी व्यवस्था बनानी ही होगी। केवल यही, इस तरह की समस्त मानवीय विपत्तियों से विश्व को छुटकारा दिला सकती है। 'आनंद मार्ग की इस तंत्र आधारित वैज्ञानिक साधना' को जगह-जगह सामूहिक रूप से करने पर इस साधना से धनात्मक अणु जीवित (पॉजिटिव माइक्रो बाइट्स) का सृजन होगा जो कोरोना जैसे जघन्य रोगों को नष्ट कर सकेगा। विश्व के समस्त साधकों से निवेदन है कि वह अपने घर में पूरे परिवार के साथ रोज कीर्तन और साधना करें। इसी तरह आनंद मार्ग प्रचारक संघ के समस्त अवधूत और आचार्यों से विशेष निवेदन है कि वे अपनी विशेष कापालिक साधना अधिक से अधिक समय तक कर, पूरे विश्व से कोरोना के इस विकराल भूत से जनसाधारण की रक्षा करें।





कोविड-19: एक सकारात्मक पहलू



डॉ. कंचन विश्वकर्मा

आउटसोर्स और बागान प्रबंधन

पर्यावरण हमारे जीवन का स्रोत है। समस्त मानव जीवन उसी पर आश्रित है। इस आधुनिक जगत में मुनष्यों द्वारा किया जाने वाला हर क्रिया कलाप सीधे रूप से हमारे पर्यावरण और पारिस्थितिक तंत्र को प्रभावित करता है। इसलिए यह बोलना अतिशयोक्ति नहीं होगी की मानव समाज ही पर्यावरण के पतन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, आधुनिक तकनीकों में अपारशक्ति है जिसने हमारे पूरे पर्यावरण को आकल्पनिक तरीके से बदल दिया। दरअसल देखा जाए तो विगत वर्षों में बढ़ती जनसंख्या ने शहरीकरण और औद्योगिकीकरण का विस्तार किया है बड़े पैमाने पर प्राकृतिक संसाधनों के अमर्यादित दोहन से प्रकृति में असंतुलन की स्थिति पैदा हो गई है। पर्यावरणीय विसंगतियों का खुलासा करती विश्व मौसम विज्ञान संगठन की रिपोर्ट The state of the global climate बताती है कि हाल के वर्षों में ग्लोबल वार्मिंग के कारण तापमान बढ़ोतरी के कई रिकॉर्ड टूटे हैं जहां वर्ष 2019 सबसे गर्म वर्ष रहा है वहीं वर्ष 2010 से 2019 के दशक को सबसे गर्म दशक के रूप में रिकॉर्ड किया गया है। पर्यावरणीय क्षति केवल जैव-विविधता को ही नुकसान नहीं पहुंचाती बल्कि मानव जीवन को भी बदतर स्थिति में ले जाती है और आज हम उन्हीं बदतर स्थितियों से गुजर रहे हैं। जिसे कोरोना महामारी का नाम दिया गया है। आज आधुनिकता और वैज्ञानिकता का दंभ भरने

वाली तमाम आर्थिक शक्तियां इस महामारी के आगे बेबस हैं। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम अपनी एक रिपोर्ट में इस बात की पुष्टि कर चुका है कि मनुष्य में हर 4 महीने में एक नई संक्रामक बीमारी सामने आती है (स्रोत- हिंदुस्तान टाइम्स)। इन बीमारियों में से करीब 75% बीमारी जानवरों से आती है इसके बावजूद भी इंसान भूल जाता है कि जैव विविधता को चोट पहुंचाना खतरनाक हो सकता है।

कोविड-19 ने जहाँ एक ओर दुनिया भर में कई चुनौतियाँ पैदा की वही दूसरी ओर प्राकृतिक सौंदर्य के अद्भुत और जीवंत नज़ारे भी देखने को मिले। पहले भी कई बार देखा गया है जब-जब महामारियों का प्रकोप हुआ है तब तब प्रकृति ने सकारात्मक करवट ली है।

कोविड-19 के लॉकडाउन ने लोगों को एकांत में रहने और उनके जीवन और प्रकृति के साथ संबंधों को प्रतिबिंबित करने के लिए पर्याप्त समय दिया है इस समय में हमें प्रकृति के साथ अपने संबंधों के बारे में पुनर्विचार और चिंतन करना चाहिए। इस महामारी के कारण पर्यावरण में हमें कई सकारात्मक बदलाव देखने को मिल रहे हैं। नदियों तालाबों समुद्रों का पानी स्वच्छ हो गया है समुद्रों में जहां समुद्र में रहने वाले जीव प्रदूषण की वजह से गहराई में रहने को विवश थे वह अब सतह पर दिखाई देने लगे ऊंचे पहाड़ों की चोटियों जो कि हवा में उपस्थित धूल और धुएं के कारण दूर से नहीं दिखाई देती थी वह अब काफी करीब से स्पष्ट नजर आने लगी।

सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट के विश्लेषण में यह सामने आया कि जैसे ही बड़े शहर लॉकडाउन की स्थिति में आए वहां प्रदूषण का स्तर गिरने लगा। मुंबई में लॉकडाउन दूसरे शहरों से पहले हुआ था। इसकी वजह से रोज का औसत पीएम 2.5 स्तर जनता कर्फ्यू के दिन 22 मार्च को 1:00 अर्थात 60% कम रहा, इसी तरह दिल्ली में 26% कोलकाता में 60% और बंगलुरु में 12% कम है अगर नाइट्रोजन ऑक्साइड के स्तर को देखें तो दिल्ली में 42% मुंबई में 68% और कोलकाता में 9% कम रहा। यह बदलाव गाड़ियों के सड़कों पर बंद होने और अन्य प्रदूषण ना होने की वजह से हुआ। (स्रोत- डाटा विश्लेषण सेण्टर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट) इतना ही नहीं नासा के सैटेलाइट द्वारा ली गई तस्वीरों में फरवरी के महीने में चीन के वुहान शहर में नाइट्रोजन ऑक्साइड की मात्रा अपेक्षाकृत काफी कम देखने को मिली। इसी तरह यूरोपीयन स्पेस एजेंसी की तरफ से जारी की गई तस्वीरों में इटली और स्पेन में भी लॉकडाउन के दौरान प्रदूषण का स्तर काफी कम दिखाई दिया है।

कोरोना संक्रमण काल में प्रकृति का यह रूप मानवीय जीवन के लिए क्षणिक है जब संक्रमण काल खत्म हो जायेगा तब देश की रफ्तार को तेज करना सभी देशों की मजबूरी बन जाएगी यही समय होगा जब हम ऐसे कदम उठाएँ जो प्रकृति को बिना नुकसान पहुंचाए सतत विकास की ओर अग्रसर हो। वायु प्रदूषण और स्वास्थ्य जोखिम को कम करने के लिए लंबे समय के और टिकाऊ निर्णय पर ध्यान देने की जरूरत होगी। इसलिए अगर हमें वाकई आर्थिक विकास और प्रकृति के बीच सह अस्तित्व की भावना बनाए रखनी है तो जीवन शैली को इस तरह बनाना होगा जिससे प्रकृति पर सकारात्मक प्रभाव पड़े।



बिटकॉइन : क्या है क्रिप्टोकॉरेंसी ?



अनिल कौशल
वरिष्ठ आईटी प्रोफेशनल

किसी भी अन्य करेंसी की तरह क्रिप्टोकॉरेंसी को भी किसी सर्विस या वस्तु की ऑनलाइन खरीद फरोख्त के लिए उपयोग किया जाता है। क्रिप्टोकॉरेंसी आभासी या डिजिटल पैसा है जो टोकन या सिक्कों का रूप लेता है। हालाँकि कुछ क्रिप्टोकॉरेंसी ने क्रेडिट कार्ड या अन्य परियोजनाओं के साथ भौतिक दुनिया में प्रवेश कर लिया है, परन्तु अधिकांश क्रिप्टोकॉरेंसी अभी पूरी तरह से वर्चुअल हैं।

क्रिप्टोकॉरेंसी में क्रिप्टो शब्द एक जटिल क्रिप्टोकॉरेंसी को संदर्भित करता है जो डिजिटल मुद्राओं के निर्माण और प्रसंस्करण और उसके विकेंद्रीकृत प्रणालियों में उनके लेन देन की अनुमति देता है। क्रिप्टोकॉरेंसी एक peer to peer टेक्नोलॉजी पर आधारित करेंसी है, इसका अर्थ है, कि इसको जारी करने, इसके लेन देन का रिकॉर्ड रखने के लिए कोई केंद्रीय संस्था या संस्थान नहीं होता है। महत्वपूर्ण बात यह है की इस पर किसी भी संस्था या सरकार का नियंत्रण नहीं होता है। अपितु ये ब्लॉक चैन टेक्नोलॉजी पर आधारित कार्य करने वाली एक वर्चुअल मुद्रा है। ब्लॉक चैन टेक्नोलॉजी एक विकेंद्रीकृत नेटवर्क होता है, और संपूर्ण विश्व में इससे जुड़े हुए कम्प्यूटर इसके लेन-देन के रिकॉर्ड का प्रबंधन एवं प्रसंस्करण करते हैं। इन कार्यों को नेटवर्क द्वारा सामूहिक रूप से प्रबंधित किया

जाता है। आसान शब्दों में ब्लॉक चैन एक साझा सार्वजनिक खाता है जिस पर पूरा क्रिप्टोकॉरेंसी नेटवर्क निर्भर करता है।

31 अक्टूबर 2008 को, बिटकॉइन: ए पीयर-टू-पीयर इलेक्ट्रॉनिक कैश सिस्टम नामक एक पेपर प्रकाशित किया गया था। इसे बिटकॉइन के आविष्कारक सातोशी नाकामोटो ने लिखा था। परन्तु आज तक इस व्यक्ति या समूह की पहचान नहीं हो पायी है।

इस पेपर में इलेक्ट्रॉनिक लेन देन को पीयर-टू-पीयर नेटवर्क द्वारा करने की एक ऐसी विधि का उल्लेख किया गया जिसको किसी भी ट्रस्ट पर विश्वास किए बिना सम्पादित किया जा सकता है। इसके पश्चात 3 जनवरी 2009 को, बिटकॉइन नेटवर्क अस्तित्व में आया। इस प्रकार पहली क्रिप्टोकॉरेंसी बिटकॉइन अपने अस्तित्व में आयी।

यदि हम बिटकॉइन की बात करें तो इसके द्वारा किये जाने वाले भुगतानों को संसाधित और सत्यापित करने के लिए बिटकॉइन सार्वजनिक कुंजी क्रिप्टोकॉरेंसी Public Key Cryptography, पीयर-टू-पीयर नेटवर्किंग और प्रूफ-ऑफ-वर्क का उपयोग करता है।

किसी राशि को एक बिटकॉइन वॉलेट से दूसरे बिटकॉइन वॉलेट में भेजना और इसका ब्लॉक चैन में इसका रिकॉर्ड बनना ही भुगतान कहलाता है। प्रत्येक बिटकॉइन वॉलेट में एक गुप्त कुंजी (प्राइवेट की (कुंजी) होती है और बिटकॉइन वॉलेट का मालिक इसका उपयोग करके उसके द्वारा किये गए प्रत्येक भुगतान को हस्तारित करता है या अधिकृत करता है।

ये प्राइवेट की (कुंजी) गणितीय रूप से प्रमाणित करता है, कि यह ट्रांसक्शन वॉलेट के मालिक द्वारा ही किया गया है। Private Key लेन-देन को किसी अन्य व्यक्ति द्वारा बदलने या संसोधित करने से भी सुरक्षित करता है। इस प्रक्रिया में भुगतान या लेन देन को ब्लॉक चैन नेटवर्क में प्रसारित किया जाता है जिससे भुगतान में शामिल बिटकॉइन को दो बार खर्च नहीं किया जा सके। इस प्रकार सभी ट्रांसक्शन नेटवर्क पर ब्रॉडकास्ट किये जाते हैं और जो की सामान्यतः 10 से 20 मिनट के अंदर प्रोसेस कर दिए जाते हैं, इसको ही क्रिप्टोकॉरेंसी की भाषा में माइनिंग कहते हैं। माइनिंग एक डिस्ट्रिब्यूटेड कंसेंसस सिस्टम है जो सभी ट्रांसक्शन की ब्लॉक चैन में होने की पुष्टि करता है फिर इसका रिकॉर्ड ब्लॉकचैन पर बना रहता है।

इस प्रकार की तकनीकों का उपयोग करते हुए, बिटकॉइन एक तेज और अत्यंत विश्वसनीय भुगतान नेटवर्क प्रदान करता है।

यहाँ ये समझना होगा की प्राइवेट की (कुंजी) गोपनीय है और सिर्फ बिटकॉइन वॉलेट के मालिक को ही इसकी जानकारी होती है। इसको किसी के साथ साझा करना ठीक उसी प्रकार होगा की आप अपनी तिजोरी की चाबी किसी को दे दें।

यदि आप बिटकॉइन उपयोग करना चाहते हैं तो आपको बिटकॉइन वॉलेट को अपने मोबाइल फोन या कम्प्यूटर पर इनस्टॉल करना होगा।



इनस्टॉल होने के उपरांत बिटकॉइन आपका एक यूनिक या अद्वितीय एड्रेस बना देगा जो आपके बिटकॉइन अकाउंट का एड्रेस या पहचान होगा। ये किसी ईमेल एड्रेस को बनाने जैसा और उसको उपयोग करने जैसा ही है, परन्तु ये एन्क्रिप्टेड प्राइवेट की (कुंजी) के साथ बिटकॉइन एड्रेस को उपयोग हेतु बनाता है। आप अपने वॉलेट से किसी दूसरे वॉलेट को भुगतान कर सकते हैं और कोई अन्य आपके आपके वॉलेट एड्रेस पर भुगतान कर सकता है।

Bitcoin को कोई भी कही भी इसके सॉफ्टवेयर को इनस्टॉल करके उपयोग कर सकता है। बिटकॉइन वॉलेट बनाने के लिए कोई भी आईडी प्रूफ की आवश्यकता नहीं होती है। इसके जरिये आप किसी भी राशि का भुगतान किसी को भी कर सकते हैं और कोई भी आपके ट्रांसक्शन को रोक या फ्रीज नहीं कर सकता। इसीलिए इसको स्विस अकाउंट आपकी जेब में भी कहा जाता है।

बिटकॉइन कोई भौतिक मुद्रा नहीं है, इसको एन्क्रिप्टेड फॉर्म में हार्डडिस्क में स्टोर कर सकते हैं। बिटकॉइन सहित कुछ अन्य क्रिप्टोकॉरेंसी अमेरिकी डॉलर में खरीदने के लिए उपलब्ध हैं, जबकि अन्य क्रिप्टोकॉरेंसी को खरीदने के लिए बिटकॉइन या अन्य दूसरी क्रिप्टोकॉरेंसी की आवश्यकता होगी।

CONIBSE जैसे पॉपुलर cryptocurrency trading exchange है जहाँ क्रिप्टोकॉरेंसी वॉलेट को बनाने के साथ, बिटकॉइन या और कोई क्रिप्टोकॉरेंसी को भी खरीद बेच सकते हैं। इसके अतिरिक्त बहुत सी अन्य ट्रेडिंग कंपनी और एजेंट भी बिटकॉइन या किसी अन्य क्रिप्टोकॉरेंसी को खरीदने बेचने का काम करते हैं। एक जुलाई 2020 को एक बिटकॉइन की कीमत लगभग 6,97,572 भारतीय रुपये के बराबर थी। ये कीमत भी प्रतिदिन कम ज्यादा होती रहती है। अप्रैल, 2020 तक लगभग 201 बिलियन पूँजी के बाजार के साथ लगभग 5,392 विभिन्न प्रकार की क्रिप्टोकॉरेंसी का कारोबार किया जा रहा था। बाजार में इनके शेयर और प्रचलन के अनुसार मुख्य क्रिप्टोकॉरेंसी, निम्नलिखित हैं –

- | | | |
|-------------------------|-----------------------------|-----------------------------|
| 1. Bitcoin (BTC) 128bn | 2. Ethereum (ETH) 19.4bn | 3. XRP (XRP) 8.22bn |
| 4. Tether (USDT) 6.4bn | 5. Bitcoin Cash (BCH) 4.1bn | 6. Bitcoin SV (BSV) 3.4bn |
| 7. Litecoin (LTC) 2.6bn | 8. EOS (EOS) 2.4bn | 9. Binance Coin (BNB) 2.4bn |
| 10. Tezos (XTZ) 1.5bn | | |

सभी बिटकॉइन लेन-देन को सार्वजनिक और स्थायी रूप से नेटवर्क पर संग्रहीत किया जाता है, जिसका अर्थ है कि कोई भी किसी भी बिटकॉइन पते के शेष राशि और लेन देन को देख सकता है। हालाँकि, किसी बिटकॉइन पते के पीछे उपयोगकर्ता की पहचान तब तक अज्ञात ही रहती है, जब तक कि खरीददारी के दौरान या अन्य परिस्थितियों में यह जानकारी सामने न आ जाए। उपयोगकर्ता की गोपनीयता की वजह से इसका उपयोग बहुत तेजी से बढ़ा है।

भारतीय रिजर्व बैंक ने 6 अप्रैल 2018 को जारी एक परिपत्र से बिटकॉइन या किसी भी क्रिप्टोकॉरेंसी को भारत में प्रतिबंधित कर दिया था पर 4 मार्च 2020 को सुप्रीम कोर्ट ने इस पर से प्रतिबन्ध हटा दिया है। हमारे देश में इस समय क्रिप्टोकॉरेंसी के उपयोग के नियम कानून पर अभी स्थिति स्पष्ट नहीं है। नयी टेक्नोलॉजी और इसके जुड़े कई मामले बेहद पेचीदा हैं। फिलहाल, कथित तौर पर भारत सरकार, भारतीय रिजर्व बैंक और भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (SEBI) के साथ क्रिप्टोकॉरेंसी के लिए एक नियामक ढांचे पर कार्य कर रही है। संदर्भ : –

1. <https://bitcoin.org>
2. <https://www.investopedia.com/tech/most-important-cryptocurrencies-other-than-bitcoin/>
3. <https://www.nerdwallet.com/blog/investing/cryptocurrency-7-things-to-know/>
4. <https://finance.yahoo.com/news/top-10-cryptocurrencies-market-capitalisation-160046487.html>
5. <https://economictimes.indiatimes.com/markets/stocks/news/sc-allows-trade-in-cryptocurrency-quashes-rbi-curb-on-use/articleshow/74470078.cms?from=mdr>



शिवांगी गोयल
आईपीएम 2015 बैच

मोना गई बाहर.....

यह वह दिन है जब मेरे दुख ने काम करने से इनकार कर दिया
और मेरे पास गुब्बारे वाले पर मुस्कुराने के अलावा और कोई चारा नहीं था,
हालांकि मैंने तीन रुपये देने का भुगतान किया
दो मूल्य के गुब्बारे के लिए।
वह दिन है जब मेरी उदासी कमरे से बाहर चली गई
और मैंने आइस्क्रीम के आउटलेट पर बैठने के लिए जल्दी काम छोड़ दिया
और मोना को उसकी आखिरी चाँकलेट तक गिफ्ट की
इसलिए मैं आज उदास होने से इनकार करता हूँ
हालाँकि मैं वैसे भी दुखी नहीं हो सकता था,
मैं महसूस कर सकता था कि यह गहरे रूप से उभर रहा है
यह वह दिन है जब मेरी हताशा ने काम करने से इनकार कर दिया था, हालाँकि
यह अभी भी मुझे गहरी रहस्यमय आग्रहों से हँसा
यह वह दिन है जब मेरे खालीपन ने हार मान ली
और चिंताजनक कार्रवाई में झटका दिया,
और मैं मुस्कुराया क्योंकि यह केवल मेरे लिए थोड़ा मायने रखता था कि मैं क्या कर रहा था,
और फिर मोना को उस मूर्ख की कार से चोट लगी, जो महसूस कर सकता था।



अरुणा छाजेड़
माताश्री प्रो. रैना छाजेड़

जीवन कलश को अपने संवारे

ये जीवन है अनमोल, मत बोल रे कड़वे बोल,
राग-द्वेष सब छोड़कर, बांध तू सबसे डोर ।
ये जीवन है अनमोल ।
काहे तू इतना इतराए, समय का पंछी उड़ता जाए,
जीवन सार्थक करना हो तो, सत से नाता जोड़।
ये जीवन है अनमोल ।
मुस्कानों की दुनिया सजाकर, जीवन कलश को अपने संवार,
बनकर फूल गुलाब चमेली, गंध प्रीत की घोल ।
ये जीवन है अनमोल ।
कौन है अपना कौन पराया, इसी सोच में वक्त गंवाया,
इसी सोच में वक्त गंवाया, वसुधैव कुटुम्बकम भाव जगाकर,
धरा में कर दे भोर ।
ये जीवन है अनमोल ।



महिलाओं के लिए लॉकडाउन टूटने न दें



डॉ. सोपनामयी आचार्या
(दाश)

आपके जीवन में सामान्य स्थिति बनाए रखने के लिए कुछ सुझाव – क्या हम कोविड 19 महामारी में महिलाओं के लिए कार्य जीवन संतुलन के बारे में बात कर रहे हैं? वैसे अवधारणा की गूगल परिभाषा काम और जीवन के बीच संतुलन का प्रबंधन करने के लिए कहती है और यह उम्र से महिलाओं के लिए चर्चा का विषय है। हम यहां पूर्ण लॉकडाउन में महिलाओं के लिए कार्य जीवन संतुलन के बारे में बात कर रहे हैं। आज के सुपरवुमन के लिए यह केवल घर से काम के प्रबंधन के बारे में नहीं है, बल्कि यह बिना नौकरानियों के घर से काम करने के बारे में है, बच्चों और भविष्य की अनिश्चितता के साथ। व्हाट्सएप पोस्ट के संबंध में हमें बिना किसी नौकरानी के जीवन के विषय के लिए दैनिक हँसी की खुराक देना एक ऐसी स्थिति है जो हमारे जैसे देश के लिए पूरी तरह से अवास्तविक है। हम घरेलू सहायकों के साथ पैदा हुए हैं, नए युग के गैजेट्स और वित्तीय आजादी ने और सुविधा दी है। हमारा मल्टीटास्कर पहले से ही जिम्मेदारी से भरा हुआ है और घर पर ऊर्जा की हमारी छोटी-सी गठरी है, क्योंकि उनके लिए तालाबंदी एक जैकपॉट की तरह है जहाँ उनके पास अपने पसंदीदा रसोइए हैं, लेकिन घर की महिलाएँ उनके बहकावे में हैं। इसके अलावा हमारे पास घर, नौकरी के दबाव, काम के

बोझ, वेतन के मुद्दों और सूची से काम होता है। कई मनोवैज्ञानिक अध्ययन हैं जो बताते हैं कि कोरोना महिलाओं को पुरुषों की तुलना में अधिक प्रभावित करता है। मानसिक स्वास्थ्य संगठन के एक अध्ययन में कहा गया है कि इस स्थिति में हर समय 1/4 महिलाएँ उदास महसूस करती हैं। हम केवल कार्य जीवन संतुलन पर चर्चा कर रहे हैं, हम देश भर में बढ़ती घरेलू हिंसा के मामलों की अनदेखी नहीं कर सकते। राष्ट्रीय महिला आयोग की रिपोर्ट कहती है कि महिलाओं से जुड़े अपराधों की 256 शिकायतें तालाबंदी के पहले सप्ताह में दर्ज की गईं। स्थिति की गंभीरता को 116 के साथ तुलना करके समझा जा सकता है जो लॉकडाउन से पहले 2 और 8 मार्च के बीच भरी गई रिपोर्टों की संख्या है। कोई भी लैंगिक भूमिका के विकास के बारे में संदेह करता है जो उसे बहुत मदद कर रहा है, लेकिन फिर भी भारतीय परिवारों का पूर्ण होना उसकी जिम्मेदारी की बाल्टी टूट रही है। इस ओवरलोड गाड़ी की स्थिति को ध्यान में रखते हुए हम मौजूदा स्थिति से निपटने के लिए कुछ तरीके जानने की कोशिश कर रहे हैं:

दिनचर्या : हम वही हैं जो हम करते हैं। हमारे सामान्य कामकाजी दिनों की तरह कहीं न कहीं स्थिर दिनचर्या होने से हमें अधिक उत्पादक होने में मदद मिलती है। उदाहरण के लिए, उसी समय पर जागना जो हम लॉकडाउन से पहले करते थे।

पर्याप्त नींद: हमें समझना चाहिए कि हमारा शरीर बहुत मेहनत कर रहे हैं। इसलिए उनके अनुसार नींद की जरूरत है। मशीन चलाने के लिए उचित सर्विसिंग होनी चाहिए ताकि कृपया स्वयं पर कठोर न हों और अच्छी नींद लें।

कार्य के लिए निर्धारित समय के साथ कार्यक्षेत्र: चूंकि हाउस होल्ड और वर्कप्लेस में अधिक समानताएं हैं, इसके बजाय वे एकदूसरे को ओवरलैप कर रहे हैं और इन सभी के साथ काम करना एक चुनौती है। तो इसका मुकाबला करने के लिए हमें आपके कार्यक्षेत्र के रूप में घर में एक कोने की आवश्यकता है और काम के लिए शेड्यूल तय करने की कोशिश करें। यह धीरे-धीरे उन्हें आपके काम के घंटे के साथ अभ्यस्त बना देगा।

परिवार के समय के साथ, मेरे पास समय है: हर सिक्के के दो चेहरे होते हैं। कोविड 19 ने इतनी बुरी चीजों के साथ हमें कुछ अवसर भी दिए। हमें परिवार का समय मिला जो हम अपने दैनिक दिनचर्या से चुराया करते थे। इसलिए इसे सर्वश्रेष्ठ बनाने की कोशिश करें। लेकिन यह मत भूलें कि हर चीज की अधिकता बुरी है इसलिए मेरे पास समय है। ऐसे काम करें जो आपको करना पसंद हो। इस समय दोषी नहीं होना चाहिए।

सलाखों के पीछे सामाजिक जानवर: युवल नूह हरारी ने सामाजिक जानवरों के रूप में हमारी यात्रा पर एक किताब लिखी। हम अलग-थलग हो गए और हमारे घरों में फंसे हम नहीं हैं। हमें अपनी वृत्ति को जीवित रखने की आवश्यकता है। परिवार, दोस्तों और सहकर्मियों से बात करें। कुछ चुटकुलों पर हंसें और कोरोना वायरस की आलोचना करें।

इन सबसे ऊपर हमें यह याद रखना होगा कि हम हर समय और हर समय नहीं कर सकते। कुछ पत्थरों को रखने के लिए सभी का अधिकार है, कल के लिए कुछ काम छोड़ना सही है, यह सब कुछ कॉल मिस करने का अधिकार है, यह सब कभी-कभी विलंब करने के लिए सही है। प्यार, देखभाल और सहानुभूति के साथ अपने आप को संभालें और संभालें यह भी बीत जाएगा।



भारतीय प्रबंध संस्थान इंदौर

एक झलक...

उच्च गुणवत्ता की प्रबंधन शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदान करने के उद्देश्य से, उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार ने, भारतीय प्रबंध संस्थानों की स्थापना, उत्कृष्टता संस्थानों के रूप में की है। यह संस्थान, उद्योगों के साथ शिक्षण, अनुसंधान और विचार-विमर्श के लिए, विश्व के श्रेष्ठतम प्रबंधन संस्थानों के रूप में पहचाने जाते हैं।

1996 में स्थापित, आईआईएम इंदौर शासकीय सहायता प्राप्त प्रबंधन स्कूलों के परिवार में छठा है। अपनी स्थापना के बाद से, आईआईएम इंदौर उद्योग, सरकारी-क्षेत्र और सार्वजनिक-क्षेत्र के उपक्रमों के साथ विचार-विमर्श कर, प्रबंधन शिक्षा के क्षेत्र में नेतृत्व कर रहा है। आईआईएम इंदौर सोसायटी पंजीकरण अधिनियम, 1973 के तहत एक सोसायटी के रूप में पंजीकृत है।

एक मनोरम पहाड़ी के ऊपर स्थित, आईआईएम इंदौर का 193 एकड़ का परिसर, मननशील अध्ययन के लिए, एक आदर्श परिवेश प्रदान करता है। आईआईएम इंदौर में नवीनतम शिक्षण सामग्री, अध्ययन के समृद्ध संसाधन, एक सुदृढ़ सूचना प्रौद्योगिकी तंत्र, अत्याधुनिक खेल संकुल एवं छात्रावासों के साथ-साथ समकालीन आधारभूत सुविधाएँ भी हैं।

मिशन...

आईआईएम इंदौर सामाजिक रूप से जागरूक प्रबंधकों और उद्यमियों को विकसित करने वाले, विश्व स्तरीय शैक्षिक मानकों के साथ, एक प्रासंगिक बिजनेस स्कूल होना चाहता है।

आईआईएम इंदौर निम्न के लिए प्रतिबद्ध है:

- ◆ प्रबंध शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्टता, अनुसंधान और प्रशिक्षण
- ◆ समकालीन भागीदार केंद्रित शिक्षण और शिक्षण विधियों का प्रयोग
- ◆ प्रबंध शिक्षा के उभरते क्षेत्रों में उपस्थिति

आईआईएम इंदौर द्वारा संचालित शैक्षिक पाठ्यक्रमों की सूची निम्नानुसार है:

अ : शैक्षणिक कार्यक्रम

- ◆ प्रबंधन में स्नातकोत्तर कार्यक्रम (पीजीपी)
- ◆ प्रबंधन में स्नातकोत्तर कार्यक्रम, मुंबई (पीजीपी-मुंबई)
- ◆ अधिकारियों के लिए प्रबंधन में स्नातकोत्तर कार्यक्रम, मुंबई (पीजीपी एमएक्स - मुंबई)
- ◆ प्रबंधन में फैलो कार्यक्रम (एफ पी एम)
- ◆ प्रबंधन- उद्योग में फैलो कार्यक्रम (एफ पी एम उद्योग)
- ◆ प्रबंधन में कार्यकारी स्नातकोत्तर कार्यक्रम (इपीजीपी)
- ◆ प्रबंधन में पंचवर्षीय एकीकृत कार्यक्रम (आईपीएम)
- ◆ संकाय विकास कार्यक्रम

ब : कार्यकारी कार्यक्रम

- ◆ प्रबंधन विकास कार्यक्रम (एमडीपी)
- ◆ अनुकूलित कार्यक्रम
- ◆ रक्षा अधिकारियों के लिए व्यवसाय प्रबंधन में सर्टिफिकेट कोर्स (सीसीबीएमडीओ)

◆ ब्रॉडबैंड आधारित कार्यकारी शिक्षा कार्यक्रम (बीबीबी ईईपी)

आईआईएम इंदौर का सबसे प्रमुख कार्यक्रम, प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पीजीपी), दो वर्षीय पूर्णकालिक आवासीय कार्यक्रम है। भारतीय प्रबंध संस्थान इंदौर द्वारा प्रदत्त स्नातकोत्तर डिप्लोमा को, भारतीय विश्वविद्यालय संघ (एआईयू) द्वारा, एक भारतीय विश्वविद्यालय के एमबीए की डिग्री के समकक्ष के रूप में, मान्यता प्राप्त है।

आईआईएम इंदौर अपने शैक्षिक कार्यक्रमों में, वास्तविक जीवन की समस्याओं को हल करने की मूलभूत समझ को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से, विभिन्न विषयों से, आंकड़े, सूचना, उपकरण व तकनीक, दृष्टिकोण और अवधारणाओं को एकीकृत कर, अंतःविषय शिक्षण और अनुसंधान के लिए एक प्रारूप अवसर प्रदान करता है।

आईआईएम इंदौर आज भारत में सबसे तेजी से बढ़ते संस्थानों में से एक है। आईआईएम इंदौर के लिए, अपनी प्रगति के पिछले कुछ वर्ष अंतरराष्ट्रीय विस्तार, नए कार्यक्रमों का प्रारम्भ, मूलभूत सुविधाओं, जनशक्ति के सुदृढीकरण आदि के विषय में सबसे फलदायी सिद्ध हुए हैं।



सिद्धिमुलं प्रबन्धनम्
भा. प्र. सं. इन्दौर
IIM INDORE

भारतीय प्रबंध संस्थान इंदौर

प्रबंध शिखर, राऊ-पीथमपुर रोड, इन्दौर - 453556 (म.प्र.), भारत
फोन : +91 731 2439666, फैक्स : +91 731 2439800